भरतपुर
१० - ३ - ६१

श्रीमान गुरुदेवजी महाराज को चर्ण
सेवक कृष्णगोपाल का दंडवत प्रणाम
स्वीकार होवे - निवेदन है कि मैंने
सुना है कि आपके स्वास्थ्य में अन्तर
बताया है मैं पंडितजी के मकान पर
गया है तो मालूम हुवा है कि देहली
गये हैं। अपनी आरोग्यता की खबर
भेजना - हमको बड़ी चिन्ता है क्योंकि
ऐसे देवता पुरुषों को सदैव प्रसन्न रखें
जो आपने विवाह के २ मुहूर्त निकाले
थे - प्रथम २६ जून व ४ जोलाई

हमने आपको ... ...

ही मुझे रखवा है - आप प्राप्ति में १
दिन को अवश्य कृपा करना जी
आपका खर्चा हम देंगे श्री पंडित
श्री गोविन्दजी आपके परम भक्त है
जनता के भी परम हितैषी है -
ऐसे ही हम भी आपके चरण सेवक दीन
ब्राह्मण है - आपके वचनों का पूरा भरोसा है
आ. हि. कृ. गोविन्द [illegible]

पोस्ट कार्ड
POST CARD
केवल पता
ADDRESS ONLY

॥ श्री जी ॥
वैद्य हरिदत्त शास्त्री [illegible]
[illegible] रोड [illegible] जयपुर
[illegible]



आदि सभी आपको सादर प्रणाम करते हैं।
श्री जैन साहब, श्री लक्खेजी, श्री पं० दुर्गाजी
सबको साष्टांग प्रणाम स्वीकार हो।
श्री बख्शी जी इनके मामाजी
श्रीमतीजी (कुमार एवं कुमारी सबको
यथोचित जयशंकर। श्री वैद्यजी, मास्टर
भगवानदासजी श्री बाबूरामजी, श्री
राजकुमार जी आदि सबको जयशंकर
गोविन्द:

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER
केवल पता
ADDRESS ONLY

INDIA 5 nP

NEW DELHI

"श्री जी"
C/o
Y.D. Bakhashi
Hindustan Housing Factory
Kothi No. 33. Bhogal
Jangpura New Delhi
No. 14.

निजया-दशमी श्री:। चौकुर्जी-भरतपुर
८-१०-६२

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्री "श्रीजी" महाराजके पुनीत पादपद्मोंमें कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वतः कुशलमस्तु।
अमावास्यासे अब तक कोई कुशल पत्र नहीं मिला सो कृपया लौटती डाकसे देनेका कष्ट सहन करें। आपके यहां पधारने पर श्री लक्ष्मीजीने पूना पारखे जीको भरतपुर आपके पधारनेका समाचार दे दिया था उसके उत्तरमें उन्होंने वहांसे पूछा है कि "श्री जी" भरतपुर कबतक रहेंगे .... श्रीजी के दर्शनकी उत्कट इच्छा है सूचना मिलते ही भरतपुर पहुँचूंगा इत्यादि कृपया यह भी सूचित करें कि इन्हें क्या उत्तर दूं या देहलीका पता भेजदूं आगेका प्रोग्राम लिखें तो कृपा होगी।
श्री [illegible] [illegible] [illegible]
श्री पं० [illegible]नन्दजी चि. वीरेश्वर धर्मेश्वर

कैम्प श्रीनगर - Bharath
19-5-67

श्री आचार्य चरणों के प्रति
पादुकाओं में दण्डवत् प्रणाम २
कोटिशः। साष्टांग दण्डवत् प्रणाम
स्वीकृत हो।

आपके पत्र तदनुसार कोशिश
मैंने बक्षीजी से फोन पर बातचीत
करनी चाही परन्तु दुर्भाग्यवश न
हो सकी मैं क्षमा चाहता हूँ। पांडे
जी की तबियत खराब होने के कारण
से वे दरबार गये हैं नहीं तो उनका
आने का प्रोग्राम था. आज मैं
शायद शुक्रवार को देहली पहुँच
के आपकी सेवा में दर्शनों को
हाजिर हो जाऊँगा. आपका
स्वास्थ्य कैसा है ~~सब~~ हम सब लोगों

को बहुत मिल रहा है. और ...
[illegible]

किसे कोन लिखो भी
काट करें। आपकी कृपा
से यहां सब ठीक हैं
अच्छी तरह हैं।

आपका ...
सेवक
Mohan



Syt. Shri S. K. Jr.
V. D. Bakhshi
Labour Officer
Hindustan Housing
Factory.
~~Hazrat Nizamuddin~~
NEW DELHI-14

वर्तमान परिस्थितिसे सूचित कर बरेली आने
का निषेध लिख दिया है। श्री छोटेलालजी रवि-
वार को मुझे मिल चुके हैं पर परिस्थिति अभी
उनके अनुकूल न होनेसे दुबारा नहीं मिले हैं। इधर
मुझे भी दिन रात हस्पतालके झंझट से अवकाश
नहीं मिल रहा है। श्री गिरिराजशरणजी का कल पत्र
आया है उन्होंने प्रणाम लिखने को लिखा है। और
आपका टे. फ़ू. नं. पूछा है। श्री दुर्गाजीने पूर्वपत्रमें
प्रणाम लिखने को लिखा है। श्री आनन्दजी के यहां
सभीको जय शंकर। गोविन्द

आनन्द श्री "श्री" जी
लाला कस्तूरीलालजी "आनन्द"
श्री. इ. एस. एच. पू. फरीदाबाद
[illegible] N.I.T.
फरीदाबाद (हरियाणा)



श्री: | चौबुर्जा - भरतपुर
८-१२-७२

श्रीमान्

अनन्त श्री करुणा वरुणालय /
आपकी सदा जय हो | कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों | सर्वत्र कुशलं सत्यं शिवं सुन्दरमेव च |
कृपापत्र अभी रमिला / मनीआर्डर ता. २-१२-७२ को करदिया है एक पत्र भी लिख दिया है / पर अभी तक पहुँच नहीं आई है | एक्सीडेन्ट ता. ३०-११-७२ को प्रात: ९।। बजे श्रीमाजी पं. रामरतनजी के घर की ओर जा रहीं थीं इधर से उधर सड़क पार करने में एक इन्जीनियर सा० की गाड़ी से टक्कर लगने से हुआ है | मस्तिष्क में दाहिनी ओर चोट लगी है काफी खून निकला था / अब होश तो आगया है पर अभी तक ठीक र पहचानती नहीं है कुछ कहना चाहती है पर कह नहीं सकती | अब तक यही स्थिति है आगे भगवान जाने / आपका पहला पत्र मिलनेपर मैंने दूसरा पत्र भी लिख दिया था | पर आपको मिला नहीं | मैंने भगवत खण्डेल वाल को भी पत्र में लिख दिया था - कि वे आपको पण्डित श्री द्वारिका नाथजी के सूचित
करदें के समाचार मिल जा [illegible]
प्रसाद को बुलाने का पत्र तो आया है पर मैं ने उन्हें

देहली आवेगा आपके दर्शनों को
शेष कुशल है। सभी को जय
शंकर। गोविन्द:

पुनश्च
श्री आनन्द जी। जय शंकर। कृपा
यह पत्र जहां "श्री" जी महाराज हों। पहुँचा दें
गोविन्द:

पोस्ट कार्ड
POST CARD
केवल पता
ADDRESS ONLY

समीपेषु
"श्री" जी
C/o
श्री अशोक कुमार आनन्द
एफ.-५/२ इ मानसरोवर गार्डन
नई दिल्ली १५



प्रातः ७॥ बजे श्रीः। चौबुर्जा-भरतपुर
२-१२-७२

अनन्त श्री करुणासिन्धु। भगवान। आपकी सदा जय हो। सर्वत्र कुशलमस्तु। मैं यहां कल सायं ४॥ बजे पहुँचा। बस से उतरते ही समाचार मिला कि माजी का ता. ३०-११-७२ को एक्सीडेन्ट हो गया है। घर आने पर पता चला कि वे अस्पताल हैं। अस्पताल गया तो उन्होंने मुझे देख तो लिया है पर पहचान लिया है या नहीं यह परमात्मा ही जाने अभी तीन दिन से बोलती बिलकुल नहीं है कभी २ कुछ टूटी फूटी भाषा में एकाध शब्द भले ही निकले अस्तु ऐसी स्थिति में क्या लिखूं। अनुमान यही होता है कि अभी बरेली चलना संभव नहीं है। आप पत्र देते रहने की कृपा अवश्य करें। ताकि आपका पता तथा प्रोग्राम ज्ञात रहे। चरणीधर यहां कल रात आया है वह भी जल्दी

आपको न जाने क्यों पत्र नहीं मिला है जो कि
सोमवार को ही मिल जाना चाहिये था सौभाग्य:
अब मिल गया है। कल चि. भगवान को भी पत्र
लिखा है उसमें पं. डी. एन जी - राजौरी गार्डन
को भी टे. फू. करने को लिख दिया है। अस्तु
इन दिनों बरेली चलना तो हो ही नहीं सकता।
अतः आप वह रामपुर ही हो आये तो ठीक है
शेष कुशल है। कृपा पत्र देते रहें। इससे संतोष
और धैर्य बना रहता है। सभी को जय शङ्कर।

आपका — गोविन्द:

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS FOR THE REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY



श्रीमान्
अशोक कुमार जी आनन्द
एफ-9/83 मानसरोवर गार्डन
नई दिल्ली 15

मध्यान्ह ११बजे श्री:। चौबुर्जा-भरतपुर
६-१२-७२

अनन्त श्री करुणावरुणालय "श्री" जी महाराजके पुनीत पादपद्मोंमें कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। शमत्र तत्रास्तु। आपका कृपा पत्र मिला। मैंने यहांसे ता॰२-१२-७२को श्री अशोककुमारजीको पत्र लिख कर सूचित किया है कि यहां ता॰३०-११-७२को प्रातः ९बजे श्री माजी का जीप मोटरसे पं॰ रामदत्तजीके घर जाते हुए एक्सीडेन्ट होगया है ३ दिनतक तो बिल्कुल होश नहीं था न कुछ बोलती थीं न पहचानती थीं ७२ घण्टे बाद अब कुछ होश है कुछ बडबडाती है कभी २ पहचान भी लेती हैं किसी २ को। कभी २ जोर २से चीखती हैं ऐसी स्थिति में कल श्री हरि प्रसादजी को भी पत्र लिख दिया है। उनका पत्र आया था कि आप आइये विवाह होता रहेगा उससे कोई

सकता हूं यही सोचकर उनको निषेध लिखा

अनन्त श्री "श्री" जी महाराज के चरणों में मेरे प्रतिदिन प्रणाम निवेदन करें अपने परिवार में भी सभी को जयश्रीकृ कहें। गोविन्द:



श्रीमान्
कृष्णकुमारजी आनन्द
K.K. आनन्द
एफ. १६७ राजौरीगार्डन
F 167/3 Rajouri Garden नई दिल्ली-२७
New Delhi-27



सायं ५ बजे श्री:। चौकुञ्ज भरतपुर
२५-११-७२

श्रीमान्
लाला कृष्णकुमारजी। जयश्रीकृष्ण।
सर्वत्र कुशलमस्तु। अभी २ श्रीपं० द्वारिका-
नाथजी द्वारा लिखित कार्ड मिला। उससे
ज्ञात हुआ है कि अनन्त श्री करुणासिन्धु
भगवान "श्री" जी आपके यहां ठहरे हैं। प्रात
एक कार्ड श्री अशोक कुमारजी आनन्द का मिला
उसका उत्तर दे चुका हूं। अस्तु मैं ता. ३०-११-७२
को पहाड़गंज देहली बरात में आरहा हूं।
वहां प्रत्यक्ष में "श्री" जी से सब बातें होजांयगी
एक पत्र अभी श्री हरिप्रसादजी को भी देहली
लिख दिया है। मेरा विचार यहां से ता.७-१२-७२
को यात्रा करने का है। आगे जैसी आज्ञा होगी
किया जावेगा। कृपया आप मुझे यह अवश्य
लिखें कि पहाड़गंज से मैं राजौरी गार्डन
आऊं अथवा मान सरोवर गार्डन दोनों
जगह जानेके मार्गकी सभी बातें खुलासा

लिखें। शेष कुशल है (P. T. O

कुशल पत्र
मिलता रहे यही
प्रार्थना है
जगदीश



पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY



अनन्त श्री "श्री" श्री
c/o
श्रीमान् कृष्णकुमार आनन्द
K. K. आनन्द
एफ. १८३ मानसरोवर गार्डन
नई दिल्ली १५

श्री: । चौबुर्जा-भरतपुर
१५-२-७३

अनन्त श्री पूज्य चरण करुणा वरुणालय "श्री" जी के पुनीत पाद पद्मों में कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वतः कुशलमस्तु। मैंने यहां के समाचार श्री पं. बलजिन्नाथ जी के पत्र में लिखवा दिये थे। अभी स्थिति ऐसी ही है। विशेष कोई बात नहीं है। आपके कुशल पत्र मिलते रहें। यह आवश्यक है। परसों [illegible] ता. को चि. हरी बाबू एवं उनकी धर्मपत्नी बरेली से आये थे कल वापिस चले गये हैं आपको प्रणाम लिखने को कह गये हैं। अभी तक "प्रभो! शम्भो" का मुद्रण नहीं हुआ है। श्री आनन्द जी तथा श्री पं० बल-जिन्नाथ जी को सादर नमस्कार कहें।

गोविन्द.

श्री वैद्यजी, मास्टरजी, बाबूरामजी
बख्शीजी, उनके मामाजी, श्रीमती
जी आपके घरमें श्रीबाँकेलालजी
आदि सभी को जयश्रीकृष्ण कहें।
श्री विश्वम्भर सिंह जी के बालक
को न्यूमोनिया हो गया है।
श्री पं० मनोहरजी का मस्तिष्क
पहले की अपेक्षा ठीक है।
"श्रीजी" को साष्टांग प्रणाम
निवेदन करें। आपका—
मिश्रीगोविन्द।

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER
केवल पता
ADDRESS ONLY





श्री जी
२१०

श्रीराम कुमार जी अग्रवाल
कुके जंगपुरा पो० आफिस
जंगपुरा - दिल्ली . १४

श्री:। चौबुर्जा-भरतपुर
२०-१०-६२

श्रीयुत

राजकुमारजी। जय श्रीकृष्ण। सर्वतः-कुशलमस्तु। अभी २ पत्र मिला, उत्तर में निवेदन है कि श्री पारखे के पत्र की प्रतीक्षा थी किन्तु उनका अभी कोई पत्र नहीं आया है अस्तु यहां सब ठीक है चिन्ता की कोई बात नहीं है। हां यहां दिवाली (दीपावली) के बारे में चर्चा है शनिवार को मानें या रवि वार को आप कृपया "श्री जी" से पूछ कर लिखें। एक राष्ट्रीय पंचांग देहली से निकलता है उसकी १ प्रति अवश्य भेज दें, और प्रतिवर्ष भेज दिया करें। "श्री जी" के स्वास्थ्य समाचार देते रहें। जैपुर से अभी पुस्तक नहीं आई है। श्री वैद्यजी से श्री "सप्तशती सर्वस्व" भेजने के लिये कहदें। शेष कुशल है। अनन्त श्री विभूषित श्री चरणों में कोटिशः प्रणाम निवेदन करें।

पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY



श्री कस्तूरीलाल जी आनन्द

आनन्द भवन C-33
NH5 फरीदाबाद
टाउनशिप

॥ श्रीः ॥ भरतपुरस्थ:
दिनांक १० 3/62

श्रीमान् बाबू कस्तूरी लाल जी
जय श्रीकृष्ण।

सर्वत्र कुशलमस्तु
श्री जी का एक पत्र
बालिया से प्राप्त था
वह तत्काल पोस्ट
कर दिया गया वह
आपको मिल गया
होगा आप उसे
जहाँ श्री जी हों वहाँ
पहुँचाने का कष्ट
करें। शेष कुशल

कि आपके स्वास्थ्य के विषय में जानकारी और
[illegible] प्राप्त हो सके. श्री सियाराम जी
का पता प्राप्त हुआ है उन्होंने भी आपको
साष्टांग [illegible] लिखी [illegible] धरती पर की
का पत्र प्राप्त है उन्होंने भी आपको
साष्टांग प्रणाम लिखे हैं, उन्होंने वहां का
पता मांगा है हमारे पास पूरा पता नहीं
था, आने वाले पत्र में नालागढ़ का पूरा
पता अवश्य लिखवायें जिससे पत्रों को
मिलने में असुविधा न हो [illegible]
कुशल मंगल हो त्रुटियों की क्षमा
चाहता हूं,

[illegible] श्री [illegible] दासानुदास
[illegible] आपको [illegible]
सहित आपको [illegible]
की [illegible] . [illegible] भरतपुर [illegible]

पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY



सेवा में
अनन्त श्री [illegible] श्री जी महाराज
द्वारा श्री पं. सूर्य [illegible] शर्मा
नालागढ़ (हि. प्र.)
NALAGARH
(H.P.)

पिन PIN

श्री: चौमुआँ भरतपुर
22.3.77

अनन्त श्री "श्री जी" महाराज के पुज्य पादों में
दासानुदासं ओमप्रकाश और साष्टांग प्रणाम करता हूँ.
आप का पत्र कल दिनांक 21.3.77 को ऑफिस के पते पर प्राप्त हुआ. आप का पत्र पढ़कर शरीर में श्वासों का संचार हुआ जान पड़ा। आपके दर्शाये हुये मार्ग पर ही चलूंगा लेकिन उस समय मस्तिष्क ठीक तरह काम नहीं कर रहा है कि मैं एम.ए. की तैयारी कर सकूं फिर भी कोशिश करूंगा, पुज्य श्री ताऊजी का स्वास्थ्य ठीक है. वह आपको साष्टांग दण्डवत कह रहे हैं श्री कुमार जी भी आपको साष्टांग प्रणाम की कह रही हैं, श्री कोमलराज जी एवं उनकी धर्म पत्नि भी आपको जयशंकर की कह रहे हैं. श्री पं. मनीराम शास्त्री जी, श्री मुकन्द जी (स्टोव बनाने वाले), श्री छोटे लाल जी, श्री नेमीचन्द शास्त्री जी भी आपको सादर जयशंकर की कह रहे हैं।
पुज्य श्री ताऊजी का वहां पर सभी मिलने वालों को जयशंकर की कहें।
आप का ... पत्र द्वारा हमें अवश्य लिखवाते रहियेगा। ...

और ११ - २ बजे ठहरकर जैपुर चलेगये हैं
किसी आवश्यक कार्य से। यहां श्री परशुराम
जयन्ति खूब धूमधाम से मनाई जारही है।
देहली से श्री नित्यानन्द द्वारा वहां का कार्यक्रम
आया है। कामा (काम वन) भी धूमधाम से
उत्सव मनाया जारहा है। श्री पारखजी को
मेरा जयशंकर कहदे। यहां के सभी का प्रणाम
स्वीकृत हो। गोविन्द:





अनन्त श्री [?] जी
c/o
म. स. पारख
दी सेन्ट्रल बुक [?] ... लिमिटेड
११८३ शिवाजी नगर
फरग्युसन कालेज रोड - पूना

श्रीः। मौकुर्जा- भरतपुर
३-५-७३

अनन्तश्री करुणासिन्धु "श्री" जी
सादर कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हो। अभी
आपका प्रेषित पत्र मिला। प्रसन्नता हुई।
आदेशानुसार १०० प्रति श्री परशुस्तोत्र
३ पु. श्री राष्ट्राऽऽलोक ३ पु. श्री संक्रान्ति-
पञ्चदशी। अभी रजिष्ट्री पार्सल द्वारा
भेज रहा हूं। कृपया प्राप्ति की सूचना दें।
सब यथा पूर्व ही चल रहा है। श्री पं. वल-
जिन्नाथजी का पत्र आया था। उसका उत्तर
तत्काल दिया गया। किन्तु उनका उत्तर नहीं
आया है। गत कल साथै बरेली से हरि बाबू
का पत्र आया है। उन्होंने श्री चरणों में
प्रणाम लिखने को लिखा है। आज प्रातः
हरिजी स्वयं दो साथियों के साथ आये

18 [illegible] को उनका बरेली जाने का निश्चित
विचार था किन्तु परिस्थिति वश [illegible]
स्थगित करना पड़ा अब भी मन में जाने की
है / यदि दोनों भाइयों की स्वास्थ्य सुधर
गया तो जल्दी जाने की सोच रहे हैं। चूंकि
बरेली वाले अब तक बहुत बार आ चुके हैं
नम्बर में उन्होंने अपने बड़े पुत्र राजू को भी
भेजा लेकिन स्थिति वश नहीं आ सके।
अनन्त श्री "श्री" जी के चरणों में मामाजी
सहित हम सभी के प्रणाम निवेदन कर
"श्री" जी के स्वास्थ्य की चिन्ता उन्हें
बनी रहती है। श्री दुर्गाजी शरणादि ठीक
हैं उनके पत्र नालागढ़ गये थे उत्तर
नहीं मिला [illegible] देते रहा करें
गये तो श्री जी के दर्शन दिल्ली करते हुये जायेंगे

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS FOR THE REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY





श्रीमान्
भोला रतनलाल जी
अग्रवाल
C/33 JANGPURA EXTN
New Delhi
न्यू दिल्ली 14

पिन PIN

॥ श्री ॥ चौबुर्जा भरतपुर

श्रीमान् भोला रतन लाल जी

जयशंकर

सर्वत्र कुशलमस्तु | पत्र मिला इतनी प्रसन्नता हुई कि आज दिन अत्याधिक प्रसन्नता में बीता ऐसा दिन बहुत दिनों में मिला वर्तमान में आपत्तिकालीन स्थिति चल रही है पत्रलेखक (लखन) हम तीनों भैयों पर चाचा जी के मुकदमें चल ही रहे हैं 26-11/65 से मेरे बड़े भ्राता कैलाश (बल्लो) जी की अकस्मात् मानसिक स्थिति बिगड़ गई एवं मस्तिष्क विकृत हो गया पूर्वापेक्षा अब कुछ शान्ति है / दिनांक 8 दिसम्बर को बल्लो जी सीढ़ीयों से गिरे और सहसा ही रुक गई | लेकिन कुछ समय पूर्व मेरे छोटे भ्राता धर्मधर जी की पैर की पासी साईकिल से गिर जाने से टूट गई और दिनांक 10 दिसम्बर प्रातः 6 बजे उसकी चिकित्सा कराई है लगभग सात दिन में पट्टी खुल जायेगी [illegible] बीत हो रही है | मामाजी का स्वास्थ्य पूर्वापेक्षा ठीक है |

यहां से सभी के प्रणाम श्रीपाद
पल्लवों में निवेदन करें।

गोविन्द:

पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY



श्रीमान्
लाला कस्तूरीलाल जी आनन्द
5.C.3
फरीदाबाद



पिन PIN

श्रीः। चौबुर्जी-भरतपुर २१-२-५६

श्रीमान्

लाला कस्तूरीलालजी, जयशंकर। सर्वतः कुशलमस्तु।

पत्र मिला, प्रसन्नता हुई। अनन्त श्री "श्री" जी महाराजके चरणारविन्दोंमें कोटिशः प्रणाम निवेदन करैं। सभी लोगों की यह धारणा है कि श्री बाबा महाराज पधारें तो सब ठीक होजायगा, आदेशानुसार दुग्धादि सब प्रबन्ध होजायगा।

जैपुर से गत कल श्री दुर्गाजी का पत्र आया है वे प्रतीक्षा में हैं और उन्होंने अपने प्रणिपात लिखने को लिखा है। आप अपने सभी परिवार के [illegible] हैं।

आगे [illegible] भी उन्हीं को।
चरण कृपा पर स्वनिर्भर
है। मेरा स्वास्थ्य ठीक
है। आजकल गर्मी होने
से ढीला ही चल रहा है।
D.N. पाण्डे का तबादला
कहाँ पर हुआ है पता दें।
आपके परिवार सहित आपको
[illegible]
आपका - गोविन्द।

पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY



श्रीमान्
लाला रतनलाल जी अग्रवाल
C-33
जंगपुरा एक्सटेन्शन
नई दिल्ली 14

पिन PIN

भरतपुर-चौबुर्जी
दिनांक 20-5-65

श्रीमान् लाला रतन लाल जी

सस्नेह नमस्कार।

जब से अनन्त श्री "श्री" जी यहाँ से पधारे हैं। कोई कुशल पत्र नहीं आया। अतः तत्काल कुशल पत्र दें। यहाँ के विशेष समाचार यह है कि मेरे चिरायु भांजे कैलाश-चन्द्र (बल्लो) की सगाई 14-5-65 को हो गई है और विवाह 30-6-65 का होना निश्चित हुआ है। यह उन्हें निवेदन कर देना। हम सभी के कोटिशः प्रणाम निवेदन करें। तथा बधाई दें। यह सब उन्हें की चरण कृपा का सुफल है।

श्री बख्शीजी, उनकी सौ. धर्मपत्नीजी कुमार तथा
कुमारी, श्री मामाजी, श्री वैद्यजी, श्री मास्टरजी
श्री राजकुमारजी, श्री पं० नित्यानन्दजी श्री पण्डे
पजी आदि सभी को यथोचित जयश्रीकृष्ण कहें।
श्री पं० विद्याधरजी पुरो. श्री लक्ष्मी जी,
श्री पं० योगेन्द्र जी, श्री पं० मदन लाल जी
श्री ज्योतिषीजी आदि सभी को प्रणाम ज्ञात हो।
श्री वेदपाठीजी का अति वृष्टि के कारण घर गिर गया है
वे कहते हैं कि वर्ष कुम्भ दीपक में स्पष्ट निर्णय है कि आगामी
आश्विनमास में दीपावली होनी चाहिये। शेष ...



श्री:। चौबुर्जा - भरतपुर १६ ५/६३

अनन्तश्री विभूषित श्री पाद पद्मों में दासानुदास के कोटिश: साष्टांग प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वत: कुशलमस्तु। गत शुक्रवार शनि को १५०) रु. का श्री पं० हरी रामजी का मनी आर्डर मिल चुका है, तथा आज श्री पं० सन्तरामजी का १४०) रु. का मनी आर्डर मिल चुका है। वैसे तो मैं दोनों को ही पत्र लिख रहा हूं परन्तु सम्भव है श्री हरीरामजी को मेरा पत्र नहीं मिले क्योंकि उनका पता स्पष्टाक्षरों में नहीं है। श्री हरिरामजी ने यह भी लिखा है कि उन्हें २ मास की तनखा नहीं मिली है मिलने पर शेष भेजेंगे। सम्वत: श्री पारखेजी पधारे होंगे उनसे आगे का क्या प्रोग्राम निश्चित हुआ? आपका स्वास्थ्य अब कैसा है? श्री लक्खोजी कहते हैं कि जो सर्वशक्तिमान् हैं उनके स्वास्थ्य की यह चिन्ता यह कैसी विचित्र बात है वे चाहें तो क्षण भर में संसार इधर उधर हो सकता है यह तो उनकी लीला है। श्री पुरोहितजी कहते हैं कि उन्हें कुछ दिन से यह चिन्ता हो गई है यह मासिक में से हटनी चाहिये और कोई बात नहीं है, और अब शरीर ही छूटता है, आप ही जाते भगवान यह की लीला है।

सियाराम गांव गया है। डा. कृष्णचन्द्र मथुरा। श्रीभाजी, शास्त्री, धर्मेश्वर आदि सभी के प्रणाम ज्ञात हों। श्री लाला कस्तूरीलालजी के परिवार में उनके श्री पिताजी आदि सभी को यथोचित जय शङ्कर ज्ञात हों। आगे का प्रोग्राम तथा पत्र अवश्य लिखें। स्वास्थ्य के लिये भगवान मृत्युञ्जय शीघ्र सुधारें यह प्रार्थना है। नकोजी भी मुझसे कुछ तनसे प्रसन्न से नहीं प्रतीत होते हैं। श्री कस्तूरीलालजी ने चि. बल्लो (कैलाश) के बारेमें कुछ नहीं सोचा है ये पत्रोत्तर भी नहीं देते हैं न सब पत्र तथा उनका ब्यौरा आपको बताते हैं। यह शिकायत संभवतः इनसे रहेगी हो। जय जय रामजी, तथा वाले यासे भी कोई पत्र नहीं आया है। आपका - गोविन्द:



॥ श्री ॥ श्री

C/o

बाबू श्री कस्तूरीलालजी "आनन्द"

आनन्द भवन मौ. 3 एफ. 5

फरीदाबाद टाउनशिप

(पंजाब)

७-११-७२ प्रात: १० बजे श्री: । चौबुर्जा · भरतपुर
[illegible]
अनन्त श्री करुणासिन्धु "श्री" जी महाराज! सादर कोटिश:
प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वत: कुशलमस्तु। आदेशानुसार ता.
२३-१०-७२ को जैपुर गया। श्री शरण जी दिल्ली गये थे। ता.
२४ को वे दिल्ली से [illegible] कर ता. २५ को जैपुर आये। और २५
की रात्रि को मुझे [illegible] हो गया अत: इच्छा होते हुए
भी वह कार्य इस दिन न हो सका। ता. २६ को कार्य सम्पन्न कर ता.
२७ को सीट रिजर्व करा कर रेल द्वारा घर आया। अब
स्वस्थ हूँ चिन्ता की कोई बात नहीं है। ता. ४ को गोवर्धन
गया ता. ५ को महालक्ष्मी पूजन से पूर्व ही म. ना. से बातों
बातों में उन्हें मुझसे असन्तोष सा हो गया और वे बिना
पूजा किये ही दिल्ली चले गये। अस्तु भगवदिच्छा।
चिन्ता की कोई बात नहीं है। संभवत: मैं शीघ्र दिल्ली
आऊं क्योंकि [illegible] उद्यापन का विचार चल
रहा है देवोत्थापनी एकादशी का विचार है। इनके
पत्र आ चुके हैं मेरे पत्र का उत्तर अभी नहीं आया है
न जाने उन्हें मिला या नहीं उनके पत्र की प्रतीक्षा है
धोरे लालजी (पराग) ता. ३ को मुझे मिले थे संभव-
त: आज सायंकाल तक फिर मिलें, अभी महाराज जी
मनोहर लाल ने फोटो नहीं दिया है। अब १।२ दिन
में दे दें ऐसी आशा है। आप अंग्रेजी वाला "प्रभो!
शम्भो!" का पर्चा शीघ्र भिजवा दें। चि. चरणीधर
ता. ४ से आया है [illegible]

[illegible] पत्र पढ़ लिया है। प्रणाम लिखने की कह गया है

ॐ श्री के. के. आनन्द तथा आपके
परिवार में भी सबको जयश्रीकृष्ण कहें।
शेष कुशल है।
गोविन्द।

पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY

श्रीमान्
अशोक कुमार जी आनन्द
एफ. १८३ मानसरोवर गार्डन
नई दिल्ली १५

F-183 MANSROWER GARDEN
N. Delhi-15



अपरान्ह २ बजे

श्री: | चौबुर्जा - भरतपुर
२५ - ११ - ७२

श्रीमान्
अशोक कुमारजी (जयशङ्कर)
सर्वत्र कुशलमस्तु | अभी २ आपका २४/११/७२ का
कार्ड मिला, प्रसन्नता हुई | उत्तर में निवेदन
है कि मैं ता. ३० - ११ - ७२ को पहाड़गंज दिल्ली
एक बरात में आरहा हूं | उस समय मैं अनन्त
श्री "श्री" जी से मिलूंगा | सब बातें प्रत्यक्ष में
होजायेंगी | वैसे मेरे विचार से मार्गशीर्ष
शुक्ल २ गुरुवार ता. ७ - १२ - ७२ को यहां से
बरेली यात्रा का दिन शुभ रहेगा | यदि मुझे
देहली होकर बरेली चलने की आज्ञा होगी
तो मैं इस दिन जनता ट्रेन से यहां से दिल्ली
आजाऊंगा | और फिर वहां से जैसे २ आज्ञा
होगी वैसा २ किया जावेगा |

[illegible]

कोटिशः प्रणाम निवेदन करें |

श्री लाला कस्तूरीलालजी के श्री पिता-
जी आदि सभी परिवार को जयश्रीकृ॰
श्री पं० श्रीनाथजी तिक्कू को भी
सादर जयश्रीकृष्ण कहें। गोविन्द:





अनन्तश्री "श्री" श्री
c/o
श्रीमान् लाला कस्तूरीलाल जी आनन्द
आनन्द भवन
सी. 3 एन-डब्ल्यू-5
फरीदाबाद N.I.T.
(हरियाणा)

सायं ६।।बजे श्रीः। चौबुर्जा-भरतपुर
मेषसंक्रान्ति १३-४-७२

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र
आपका सर्वदा जयजयकार हो।
सर्वत्र कुशलमस्तु। अभी १ घण्टा पूर्व
पत्र मिला प्रसन्नता हुई। मैं आपके
पधारने की प्रतीक्षा में हूं। पधारिये।
जैपुर से श्री लाला गिरिराजशरणजी का
पत्र आया है वे आपके जैपुर पधारने की
प्रतीक्षा में है। श्री दुर्गादत्तजी का भी
पत्र आया है, दोनों ही पत्रों में प्रणाम
लिखने को लिखा है। नालागढ से श्री
सूर्यभाणजी का पत्र आया है। एक पत्र का-
श्मीर से आया है। श्री पं० वलाजिन्नाक
जी शिमला से पत्र आया है। उन्हें आप
यहां आकर देख ही लेंगे इसीलिये डाक से
नहीं भेज रहा हूं। शेष कुशल है

NEW DELHI

पोस्ट-कार्ड

DELY
JUL 57
2
4 30PM

केवल पता



श्रीमान्

नाम बाँकेलाल राजकुमार अग्रवाल

पता १२ रंजीत प्रेस

डाकखाना बिरला मन्दिर के सामने

ज़िला नई दिल्ली

श्रीमान्

लाला बाके लाल जी राज-
कुमार जी, जय शङ्कर। सर्वतः कुशल-
मस्तु। अभी आपका पत्र मिला आपने
सौभाग्य कांक्षिरानी कुमारी अथवा
उस लड़की का नाम नहीं लिखा है
इस मुहूर्त कैसे बनाया जाय कृपया
और इती जल्दी से नाम लिखकर
भेजो। "श्री जी" हो तो साद
साखाना प्रकाम में निवेदन करें
गत कल रात्रि को ही पत्र लिखा है
मिली होगी। शेष कुशल

... मित्र ...

Kavipundarikam

Sampoorna Datta Mishra

M. A. (*English*), **M. A.** (*Sanskrit*)

राजाखेड़ा (भरतपुर)
Mohalla Gopal Garh
BHARATPUR (RAJASTHAN)

Dated ...६-३-१९६१...

पूज्य आचार्य,

श्रीचरणस्पर्श। अब तो आपके दर्शन किये बहुत दिन होगये हैं। सुना है आपको स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा है। इसलिये आप यहाँ पधारें। भरतपुर में अमरेशकुमार बी. एस. सी (फाइनल) की परीक्षा दे रहा है। उसकी परीक्षा समाप्त होते ही आप कृपा कर उसको साथ लेकर यहाँ आ जाइये। आगरे से यहाँ नदी पार करके आना पड़ता है। उसको साथ लाने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि वह सब मार्ग जानता है।

अभी चाचाजी (मिश्र गोविन्द जी) के पत्र से आपका पता लगा है। पहले भी मैंने आपकी खोज की थी। कलियुगी समाज की ओर से जब मन खिन्न होता है तो आपका स्मरण आ ही जाता है। ये तो रात दिन के झगड़े हैं, कुछ न कुछ लगे ही रहते हैं। यदि आप सीधे दिल्ली से ही आना पसन्द करें तो कृपा कर ऐसा लिख दीजिए ताकि मैं या तो नदी किनारे पहुँच जाऊँ या आपसे आगरे आकर मिलूँ।

आगरे से टूला नदी को बस चलती हैं। टूला नदी पर बस छोड़ देगी। नदी में घुटनों तक जल है। पैदल पार करना पड़ता है। इस किनारे ताँगे मिलते हैं। छः आना सवारी लेते हैं। राजाखेड़ा नदी से पाँच मील है। आगरे से टूला नदी के ।।।) लगते हैं। यह मार्ग है।

आपका
सम्पूर्णदत्त मिश्र

श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

श्री:। चौकुर्जी - भरतपुर २३ ११/६०

अनन्त श्री विभूषित श्रीपाद पद्मों में दासानुदास गोविन्द के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों।

सर्वतः कुशलं सत्यं शिवं सुन्दरमेव च।

श्रीकृपा से सानन्द भोपाल पहुँचे होंगे।

गत परसों ही श्री सीताराम जी का पत्र आया है कल रुदावल जाने के कारण न भेज सका अब पत्र के साथ भेज रहा हूं। गत रात्रि को ८॥ बजे श्री गिरिराजशरणजी की जननी का शरीरान्त हो गया है।

श्री जैन के ३ पत्र पाये हैं उन्होंने अनेकों अभिवादन लिखे हैं।

श्री तिवारी जी को उनकी पुस्तक लौटा दी है।

शेष कुशल है।

श्री वैद्यजी, पं० द्वारिकादत्तजी। श्री मास्टर जी आदि सभी से सादर जय श्रीकृष्ण कहें। दासानुदासो-
गोविन्दः

श्री

भरतपुर
7-3-69
वक्त 12 बजे दोपहर

श्रीमान् आदरणीय श्री पं. जी के चरणों में प्रणाम स्वीकार
हो - कृपा पत्र आपका ता. 4-3-69 का लिखा आज मिला
समाचार जाने प्रभु श्री जी के द्वारा आप नहीं मिले सो
कोई बात नहीं - मगर उनके समाचार जानकर मन को चिन्ता
हुई वहाँ तो आपके एक नौकर के रोबदार हाथ पे वहाँ प्रत्यक्ष
रूप हैं श्री भगवान उन्हें शीघ्र ही आरोग्य करें जिससे
हम जैसे घबड़ाए हुए मानवों को कुछ सान्त्वना बनी रहे
उनके हमारा प्रणाम कहदें उनको तो [illegible]
आप अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें मुझे तो
केवल आपका ही सहारा है - वैसे तो दुनिया ही निकम्मी
हो गई मगर जैसा मान लिया है वहां तक बड़ी शान्ति
का कारण है - मेरा स्वास्थ्य पहिले से एक आना खराब
है - दर्द बढ़कर के पेट तक होता है - घुटनों में दर्द - मस्तक
में दर्द - दस्त साफ नहीं होता - सिर में दर्द - मंदाग्नि
तो चलती ही रहती है - रुई का रोग इन सब रोगों से
अधिक है - फिर जो होना है - होता रहेगा - आप
अपने तथा श्रीजी के स्वास्थ्य का खास ध्यान

स्टपल इलाज करावे - श्री - योगेन्द्र जी पहिले से स्वास्थ
है और २ स्वास्थ्य लाभ हो रहा है - श्री मनोहर जी गुप्त
के विवाह में प्रभाकर जी को कह दूँगा - मिस्त्री फकीर
लाल जी ने घर माजी से कहला दिया है —

आपके घर माजी तथा श्री पं. तानी जी सब ठीक है
और घर परिवार सब कुशल पूर्वक है आपको
ॐ वंदना कहा है — बाकी और सब ही परिचित सज्ज
नों से जैसाँ कह दूंगा - श्री प्रभाकर जी - आपको व
श्री जी को जैसाँ कहकर स्वास्थ्य के बारे में पूछते है
माती मर्दे मास्टर भगवत जी - रघुवर जी - [illegible] कहते है
श्री - बाबूलाल जी का स्वास्थ्य पहिले से ठीक है मामूली ज्वर दोपहर
२ बजे बाद हो जाता है। कुवर श्याम ठीक रहती है खांसी
पहिले से कुछ कम है साधारण सी कुछ आता है —
कमजोरी है - कल दिन वार $\frac{3}{12}$ बजे बाद [illegible]
का सम्बन्ध अपना पक्का कर दिया और गा - इस कदर
आपके न होने से आपकी राय भी कमी महसूस की जा
रहा है ठीक है बाकी सब ठीक है [illegible] की हालत जो थी
वैसी ही चल रही है, [illegible]
स्वीकार हो — [illegible]

आपके आने पर जिम्मेदारी - भगवन् आपके चित्त
को सदैव प्रसन्न रक्खें - यही मेरी उनके चरणों
में हर हमेशा प्रार्थना है —

आज ६६) का अप्रेल वायदा सोमवार
को ६८) रुपये रहा गति सभी वाले के ५१५३॥) उन्न
शाम और देना पड़ा क्योंकि ५७५) होकर ५५४) हो
गया और आज भी क्यों कमाया मिलते हैं —
सोमवार को ५५८) का भाव है बाजार मन्दा था
पन्त जी के द्वारा - शायद ऐसा हो सकता है कि
आपके आगस्त वायदा पर लीन होगा जो ५८५॥) है
आप चिन्ता न करें अब नहीं हुवा है तो आपकी
विचार धारा के अनुसार अब हो जायेगा - महानपुरुषों
का विचार खाली नहीं जाता — श्री. जी के चरणों में मेरा
प्रणाम कह दीजियेगा - पं. लक्ष्मीनारायण - प्रधान जी - पन्नालाल जी - पोद्दार
जी - श्री. किशनभार जी - श्रीरघुनाथ चरन जी मा. भगवत प्रसाद जी
आदि सब आपको प्रणाम कहते हैं - आपके यहाँ सब प्रकार कुशल
ता है और सब परिवार भी प्रणाम कहते हैं - वहाँ के निजवासियों
भी तथा [illegible] - कृपया पत्रोत्तर शीघ्र
देते रहिए —— [illegible]

श्री. मोहनलाल
भीमताराम
कुन्दन मेड़ा

श्री

भरतपुर
९-३-६१

परम आदरणीय श्री पं. जी के चरनों में प्रणाम स्वीकार हो

आपका कृपा पत्र ८-३-६१ का लिखा गति कल ही मिल गया।
था - मगर उत्तर न देने का कारण यह था कि श्री - बहनोई
सा. के छोटे भाई बाबू जवाहर सिंह जी की हृदयगति रुक
जाने से मृत्यु होगई थी - सारा दिन उधर ही चला गया
वहाँ से लोटा तो कि अस्वस्थ होगया नाक से खून काफी
गया - इस समय भी सिर में दर्द हो रहा है जो भोग भोगने है
भोगने ही होंगे - आपका लिखना यद्यपि ठीक ही है कि
आप किसी चिन्ता न करें - मगर क्या लिखूं मुझ जैसा मस्त
आदमी जिसने आज तक चिन्ता नहीं की बहुत कोशिश
करता हूँ मगर क्या बताऊं ख्याल दिल से हटता ही नहीं
जब उन लोगों का पत्र आता है वह घाव हरा हो जाता
है - आपसे जरूर कर बद्ध प्रार्थना है कि आप इस
ओर ध्यान न देवें अपना स्वास्थ्य तथा श्री - जी के भी
स्वा. का ही ध्यान रखिये मैं तो केवल आप के ही
बल पर जीवित हूँ - आप की डांट का मेरा मन
शान्त हो जाता है - आपके आदेश अनुसार शुक्रवार को
श्री राज [illegible] कन्या बटुक

श्री

भरतपुर
5-3-57

परम-आदरणीय

श्रीमान् पं. जी के चरणों में प्रणाम स्वीकार हो -
सुबह पत्र लिखा था - अब दूसरा पत्र सेवा में भिजवा
रहा हूँ - आज 10 तथा 15 के दो मनी-आर्डर देहली नं. 24
के पते पर आपको वापिस किये हैं - मिलने से सूचित
करना एवं हिन्डोन की - दूसरा सिजात रोड़ की का दो पत्र
भी पता काट कर भिजवाये हैं मिल गये होंगे - यहाँ श्री बाबू
जान जी का स्वास्थ्य पहिले से ठीक है - घर पर माजी तथा श्री
भाभीजी सब कुशल पूर्वक हैं - मैं स्वयं गया था
कोरेश्वर - धौलेश्वर की जै शंकर मालूम करना - श्री जी को
मेरा तथा सबही की ओर से चरणों में कोटि २ प्रणाम
उनका स्वास्थ्य के बारे में पूछ कर लिखना - अब क्या
हाल है - चिन्ता अब तो ठीक आती होगी - मोतीराम
जी सब को प्रणाम लिखवाता है तथा तबियत के समाचार
पूछता है - यहाँ मेरी तबियत स्वस्थ नहीं है - दवा चालू
है - आपकी कृपा से शीघ्र ही ठीक हो जायगी -
मेरी ओर की चिन्ता छोड़ दें - प्रभु जो करता है वह
ठीक ही करता है — आप अपने स्वास्थ्य

का ध्यान रखोगे - मुझे हर समय आप के स्वास्थ्य
की चिन्ता रहती है - कारण आज तक ऐसा क्यों
होता है - सिर्फ आप का मेरे प्रति जो स्नेह है वही
मुझे हर समय आप की याद दिलाये रहता है —

रहा व्यापार सम्बन्धी चर्चा की मात वायदा अप्रैल
का जो धन्धा हमारा है वह बुधवार (४ पके ४ रुपया)
था दूसरा नया वायदा अगस्त ४(८४।।) है इससे
हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है — आशा है कि
आपके कारणों के अनुसार ही यही हमारा व्यापार
अप्रैल वायदा भी ४९०/ या ऊँचा हो जाये —
चिन्ता तो नहीं करता मगर न जाने इस बार क्यों
ऐसा होता है - जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ
प्रभु इच्छा - जो होना है वही होगा - आप कब
तक भरतपुर पधारेंगे - रमेश चन्द्र को जौंडिस
मालूम हुआ - बाकी सब ही परिचित लोगों को
जौंडिस मालूम हुआ — कृपा बनाये
रखना कोई काम हो तो जरूर लिखना
आपके स्वास्थ्य के लिये समाचार भेजते रहें सुख तथा
कुशल देते रहें आप —

वहां जमीकन्द मिलता हो तो वह भी जितना आप पुराना पुराना मिल सके
ले आना लेकर आना

श्री। चौकुर्जा - भरतपुर ८-१-६२

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दासानु-
दास के कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वत: कुशलमस्तु। यहां से पधारने
के पश्चात् गत परसों श्री पं० सत्यरामजी के पत्र से आपके पधारने के समाचार
मिले कि आप गत २५-१२-६१ को नालागढ़ पधारे हैं, स्वास्थ्य के बारे
में वे भी लिखना भूल गये अस्तु आपकी इच्छा मेरे विचार से कभी २ स्वास्थ्य
समाचार तो देने ही चाहिये आपकी इच्छा आये हुए पत्रादि सेवा में साथ
ही भेज रहा हूं।

गत २२ दिसम्बर को मैं जैपुर गया था वहां श्री पं० दयानन्द जी एवं रमानन्द
जी से पुस्तक छपाने की बात चीत हुई उसके बारे का पत्र जो आया है सेवा में
भेज रहा हूं। वैसे श्रद्धा रमानन्द जी की श्रद्धा अब त्रिवेदी जी में पूरी हो चुकी है
कुछ ऐसे ही व्यवहार आपस में हो गये हैं। श्री स्वामी मूर्खोरण्य जी भी
तत्व समझ गये हैं। पुस्तक "श्री श्री विंशातिका शास्त्रम्" का पद्यानुवाद
श्री गुरुमुखि दास जी वाला छपाने का विचार था जैसी आज्ञा हो किया जाय
श्री रमानन्द जी ने गद्यानुवाद स्वेच्छा से लिखा है मेरी इस बारे में उनसे
कोई बात चीत नहीं हुई अभी उन्हें कोई उत्तर भी नहीं दिया है।

श्री नरवले जी, श्री आकूत जी, श्री वहा जी, श्री पं० बदरीदत्त जी के पत्र मात्र हैं।
आगे का क्या प्रोग्राम है यदि उचित हो तो लिखें। सुना है कि मथुरा में
छपाई और भी सस्ती है श्री तिवारी जी कहते थे। यदि आज्ञा हो तो
मथुरा जाकर तलाश कर आऊं और जो पुस्तकें भेजनी भी हैं दे आऊं
अभी महानवमी तक तो कहीं जा नहीं सकूंगा। शेष आप जानें।
श्री पुरोहित जी, श्री [illegible] सिंह जी, श्री जैन सा०, श्री गिरिराज शरण जी
आदि सभी के सादर प्रणाम स्वीकृत हों। श्री पुरोहित जी का पुत्र चि.

श्रीलो २ मास से लापता है परन्तु आत्मविलास के अध्ययन के मुसार वे एवं आपके अनुग्रह से वे मस्त रहते हैं। श्री दुर्गादत्त ने प्रणाम लिखने को कहा था वैसे ठीक चल रहा है। दासानुदासो गोविन्दः

ता. ६-२-६२

अनन्त श्री

"श्रीजी" महाराज को कोटिशः प्रणाम ज्ञात हो। अभी २ पत्र मिला यहां सब कुशल है। चिन्ता की कोई बात नहीं है। डाक भेज रहा हूं। श्री आकूत जी का १ कार्ड पहले डाक बाद और आया था जिसमें उन्होंने अभी १ मास मथुरा रहना लिखा है यदि आज्ञा हो तो मिल आऊं और पुजापे दे आऊं। श्री बा कुशल है। वसन्त पीछे जैपुर जाने को सोच रहा हूं। आपका गोविन्दः

यह डाक नालागढ़ से वापिस कल ही आई है।

श्री सालगराम जी को जय श्री कृष्ण ज्ञात हो

लक्षण अजा अनूप मात लक्ष्मी मती।
तुंग धनुष पैंतीस तिष्ठ करुणापती ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ: ठः ठः स्थापनम।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

[अथ अष्टक] [त्रिभंगी छन्द]

पद्महृदनीरं गंधगहीरं अमल सहीरं भर लायो।
कंचन मय भारी भर सुखकारी पूज तिहारी कर धायो ॥
श्री कुन्थुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुण मालं।
तेरम मक्रेश्वर षट्चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जलं।

घस चंदन बावन दाह मिटावन निरमल पावन सुखकारी।
तुम चरणचढाऊं दाह नसाऊं शिवपुरपाऊं हितधारी। कुंथु० चंदनं
अक्षत अनियारे प्रासुक धारे पुंज समारे तुम आगे।
अक्षयपद दीजे बिलम न कीजे निज लख लीजे सुखजागे। कुंथु० अक्षतान्

चौ. ११२

गहो हाथ स्वामी करो बेग पारा, कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा ।
सबै ज्ञान के बीच भाखी तुम्हारे, करो देर नाहीं अहो संत प्यारे ।११।

घत्ता-श्रीशांति तुम्हारी कीरति भारी, सुन नर नारी गुण माला ।

चौ. बखतावर ध्यावे रतन सु गावे, मम दुख दारिद सब टाला ॥१२॥

१११ ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय महाऽर्घं ।

शिखरिणी छंद-अजी ऐरानंदं छबि लखत हैं आय अरनं,
धरें लज्जा भारी करत थुति सो लाग चरनं ।
करे सेवा कोई लहत सुख सो सार छिन में,
घने दीना त्यारे हम चहत हैं बास तिन में ॥ १३ ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्री शांतिनाथ जिन पूजा संपूर्ण ।

अथ श्री कुन्थुनाथ जिन पूजा

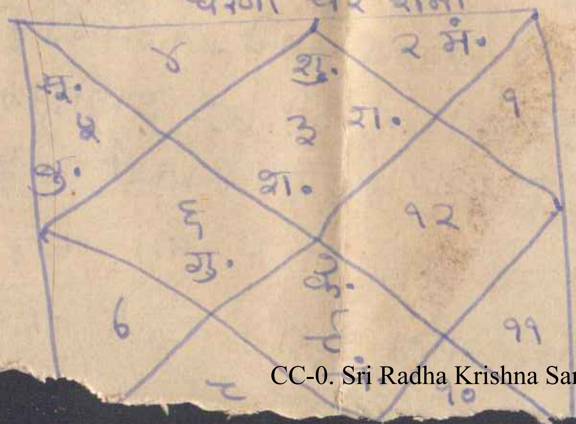
पूजा

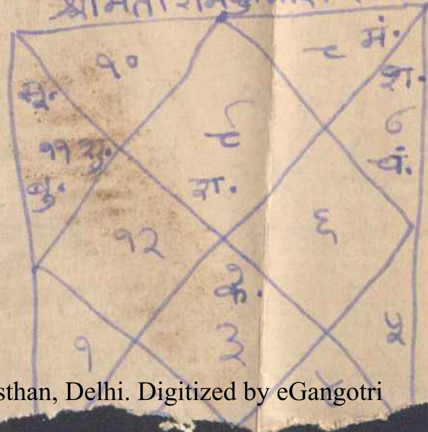
[स्थापना] (छन्द)

१११ गजपुर नगर मंझार भान प्रभु भूप जी ।
कुन्थु नाथ जिन पुत्र भये सुख रूप जी ॥

विशेष —

— धर्म संघ प्रकाशन मेरठ द्वारा प्रकाशित "जगद्गुरु गौरव" नामक ग्रन्थ में एक लेख पढ़ने पर जिज्ञासा हुई है कि क्या गायत्री जप व्याहृति रहित करना चाहिए अथवा मूल मन्त्र में प्रणव लगाकर व्याहृति सहित जाप करना चाहिए, लेख में व्याहृति सहित जप सन्तति बाधक गार्हस्थ्य के लिये उपादेय है — इधर १९६५ के १९ जून गुरुवार एकादशी को मेरा विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ है अद्यावधि इस जन्म को स्वीकार करना सार्थक न हो सका है। अत: जन्मपत्र उभय लिख रहा हूँ अवलोकन करके दिशा निर्देशित करने की कृपा करें यन्त्रवत् उपरोक्त सभी वृत्त लिख गया है आपकी अकारण करुणा का "नाम करण" किए जाने से अब तक अनुभव करता रहा हूँ वही संबल है जो निवेदन करने का साहस किया है। त्रुटि के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ पुनरपि





सादर सप्रश्रय अभिवादन निवेदन करते हुए विराम करता हूँ। [illegible]

— भावत्क:

— धरणीधर:

उप प्राचार्य:

धर्म की ... प्राणियों में सद्भाव ...

अधर्म का नाश हो !! हर हर 卐 महादेव विश्व का कल्याण हो !!

दण्डी स्वामी धर्म संघ संस्कृत महा विद्यालय

शाहपुर रोड, लुधियाना (पंजाब)

क्रमांक............... दिनांक ११ दिसम्बर

परमाराध्य प्रात: स्मरणीय महामहिम १००८ श्री ल श्री
"श्री" जी महाभाग के पावन पादपद्मों में शतश: नमन।

देव ! चिर समय से सम्पर्क अभिकाङ्क्षित होने पर
भी ईश स्पृहा के अभाव में सफल न हो सका।
भरतपुर से आदरणीय श्री मामाजी ने प्रिय ओम्प्रकाश शर्मा
द्वारा आपका पता प्रेषित कराके मुझे कृतार्थ किया है उनका
स्वास्थ्य प्रतिकूल चल रहा है।
(जुलाई ६८) नव सत्र के प्रारम्भ में ही मैं यहाँ आगया था
तभी से आन्तर भावना वशात् मैं निवेदन करना चाहता था कि
पञ्जाब प्रान्त में आने पर मुझे अवश्य सूचित करने की कृपा
करें। मुझे यह सत्र गृहलक्ष्मी के बी.एड. प्रशिक्षणार्थ
मुसावर, भरतपुर, में प्रवेश लेने के कारण एकाकी ही पूर्ण
करना है, यहाँ सब प्रकार से सुविधा है अत: आप
यथा सम्भव [illegible] समय प्रदान करने की

भरतपुर
२-२-५२

श्री श्री १००८ श्री परम पूज्य श्री जी

के चरण कमलों में आपके दासानुदास लक्खी के अनेक साष्टांग दन्डवत स्वीकार हों।

कृपा पत्र मिला। बाबू कस्तूरीलाल जी का पत्र साथ में भेज रहा हूं।

फैरोजा पब्लिक की फेन्टरी अभी तक नहीं आई है पता नहीं कब तक आवेगी। सावित्री बहन को भी सम्बन्ध अभी कहीं पर भी ~~विवाह~~ तै नहीं हुआ है इन दो कारणों से बहुत चिन्तित हूं। भविष्य का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है कि इनमें क्या होगा। हरी के देहली में लड़का हुआ है

पं. जी. देहली गये हुए हैं आज करीबन १५ रोज हो चुके परन्तु अभी तक वापिस नहीं आये हैं।

श्री स्वामी शिवानन्द जी आजकल देहली विराज रहे हैं।

~~पू. श्री ने~~.

पत्र में देर होने का कारण यह थी कि मैं इन दिनों जयपुर, अजमेर लड़का देखने गया हुआ थी —

आशा है दास की गलतियों को क्षमा करते रहेंगे

आपका दास
लक्खी

2) मुझे उनका कुछ भी पता नहीं था वरना मैं
अवश्य उनसे मिलता। और आपकी आज्ञानुसार
मैं [illegible] से भी मिला तथा श्री [illegible] की
[illegible] भी थी लेकिन उन्होंने तो बहुत [illegible]
से [illegible] किया और न वह मिलना ही चाहती हैं
वह कहती थी कि वहाँ खुद आकर मिल जायें मैं तो
इस बात कहीं भी नहीं [illegible] निकली है। ~~[illegible]~~
~~श्री~~ मेरा विचार कल उनके घर जाने का है। बातें तो बहुत
सी हुई हैं पर कहाँ तक लिखूँ श्री [illegible] बाबत
[illegible] श्री को विचार [illegible] श्री [illegible]
[illegible] को भी उनका सब कुछ मालूम है [illegible]
[illegible] कोई कार्य हो तो कृपया सूचित करें।

आपका दास
लक्ष्मीचन्द्र

CABLES : "LAKHOJI."

DR. R. C. GUPTA & Co.

AUTOMOBILE & CYCLE GOODS IMPORTERS, REGISTERED DEALERS & CONTRACTORS

Ref. No.

BHARATPUR, २५-५- 194 5

Stockists of :
DUNLOP TYRES AND ACCESSORIES
PICTURE FRAME AND GLASSES
ELECTRICAL SUNDRIES AND BULBS
PAINTS & VARNISHES
TOOLS, HANDWARE AND AUTOMOBILE ACCESSORIES
NEW CYCLES AND CYCLE PARTS
MYSORE LAMPS
LUBRICATING OILS AND GREASES
RADIOS

श्री श्री १००८ श्री आचार्य चरणों में आपके दासानुदास लक्ष्मीचन्द के कोटिशः साष्टांग दण्डवत स्वीकार हों।

आगे आपकी आज्ञानुसार मैं श्री [illegible] जी से मिला उन्होंने कहा था कि मुझसे कुछ भी सेवा नहीं ली गई है मैं हर वक्त सेवा करने को तैयार हूं उनसे करीबन २०-२५ मिनट तक बातें हुई मुझे तो ऐसा ज्ञात पड़ता था कि वह पं. हरदेव जी की बातों से असन्तुष्ट से थे परन्तु उन्होंने जाहिर नहीं किया वहीं पर मुझे पता लगा था कि श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज आये हुए हैं और वह वृन्दावन गये हैं मैं यहां पर सोमवार की रात की गाड़ी से लौट कर वापिस आ गया था कल और परसों कुछ तबियत खराब होने की वजह से कुछ नहीं लिख सका जिसके लिए क्षमा चाहता हूं। श्री स्वामी जी पं. जी के साथ ही गये हुए हैं वह शायद आज आ जावें वह भी वृन्दावन आने के लिए कह रहे थे शायद २-४ रोज में ही आवें। और श्री स्वामी जी कहते थे कि पं. हरदेव जी भी देहली आये हुए हैं

सहारनपुर ३ अप्रैल

हां है श्री. जी के चरणों में मेरे और पं. जी के साष्टांग प्रणाम स्वीकार हों आज ज्योतिष भवन का उद्घाटन भी हो गया है नाम "श्री गोविन्द ज्योतिष भवन सहारनपुर" पर रखा गया है. शेष कुशल क्षेम है।

आपका

[signature]

आपके इलाज के बाबत लिखना यह है कि इलाज मद्रास में तथा कलकत्ता में तैयार है खर्च करीबन ४ हजार) में है जो चाहें लिखियेगा क्या विचार है।

CABLES : "LAKHOJI."

DR. R. C. GUPTA & Co.

AUTOMOBILE & CYCLE GOODS IMPORTERS, REGISTERED DEALERS & CONTRACTORS

Ref. No. ....

BHARATPUR, 3 नवेम्बर 194–

Stockists of:
DUNLOP TYRES AND ACCESSORIES
—
PICTURE FRAME AND GLASSES
—
ELECTRICAL SUNDRIES AND BULBS
—
PAINTS & VARNISHES
—
TOOLS, HANDWARE AND AUTOMOBILE ACCESSORIES
—
NEW CYCLES AND CYCLE PARTS
—
MYSORE LAMPS
—
LUBRICATING OILS AND GREASES
—
RADIOS

श्रीयुत बाबू रोशनलाल जी
जै शंकर:
पत्र आपका मिला समाचार लिखे सो जाना.
मगवाया था सो कोई अभी मिला नहीं है
अभी तक 15 पेटी और
कारण यह है कि सबसे प्रथम तो यह देखना है कि जो
पार्सल आपको हम भेज चुके हैं वह ठीक पहुंचती भी है
कि नहीं जब पहुंच जावे तब उधर से हमको समाचार देवें
दूसरी बात यह है कि अमावस्या के
दिन प्रातः 5/30 पर कन्या जन्म हुआ है इसलिए दस
दिन को आशौच है भरतपुर मिल नहीं रही उधर से
मंगवाता है आगे जो मेरे लिए आज्ञा हो उसके लिए
मैं हर वक्त तैयार हूं श्री स्वाध्याय इनके पास अभी
तक नहीं आया है ग्राहक बराबर चक्कर लगा रहे हैं व
रुपया भी नये ग्राहकों से थोड़ा सा प्राप्त हुआ है वह भी
तगादा कर रहे हैं व मैंने २ पत्र श्री पं. हरदेव जी को डाले हैं
एक शिमला व एक देहली लेकिन अभी तक कोई भी जवाब
नहीं है व न श्री स्वाध्याय ही आया है समझ में नहीं
आता है कि क्या कारण है और न पं. जी के पास ही
उनका कोई समाचार है। पिछले पत्र में स्वाध्याय समाचार
आज्ञा न होने के कारण [illegible] भेजे यथा पूर्व

Gram : LAKHOJI

Phone : 33

DR. R. C. GUPTA & CO.

Direct Importers, Exporters & Government Contractors.

Ref..........

BHARATPUR 10/8/1956

श्रीमान सरदारी लाल जी

नमस्कार

आपकी रजिस्ट्री मिली समाचार विदित हुए
तथा वह रजिस्ट्री श्री जी की आज्ञानुसार मैंने
स्वयं सीधके वाड़े जाकर पं. जी को देदी।

वह बांध तो 7/8/56 को टूटा था और अब
ता. 9/8/56 को फिर दुबारा श्री बिहारी जी गिरपड़े है तथा
अबकी बार एक हाथ टूट कर दूसरी जगह फिर गिरा है तथा
कुरते के ऊपर से भी टूट गये है व जोड़ निकल आये है
कुरते के ऊपर तथा नीचे बीच साफ़ दिखलाई दे रही है।
कमिश्नर साहब जयपुर से परसों पधारे थे परन्तु अभी
तक कोई भी निर्णय नहीं किया है। पं. जी सीधके वाड़े
है वह अभी 2-3 रोज़ बाद आवेंगे। आप यह संदेश
श्री जी के पास अवश्य ही भेज दें। श्री जी को आप कृपया
मेरा नमस्कार भी कहदेवें। आपको भी मेरा नमस्कार
स्वीकार हो - और कोई मेरे योग्य कार्य सेवा हो तो
नि: संकोच लिखने की कष्ट करें। आपका

[illegible]

यहाँ काट कर खोलिये →

श्रीमान पं. जी के चरनों में प्रणाम [illegible]

[illegible] बाद हो

[illegible] होगा अब मेरी तबियत

[illegible] आप अपनी कुशलता [illegible]

[illegible] महाराज के चरनों

[illegible] रहता हूँ आज कल

[illegible] रविवार को पता लगा

[illegible] चन्द्र के पत्र से मालूम

हुआ [illegible] में [illegible] तबियत

जैसी की वैसी चल रही है [illegible] में

कोई आराम नहीं [illegible] ऐसी हालत

में [illegible] रहे [illegible] आराम

[illegible]

को [illegible] इन्दुशेखर [illegible]

जी [illegible] शुरू करा देना या

जिस प्रकार ठीक समझो वह राय

बता देना। आगे [illegible]

२५) रु. मागने [illegible]

में आने पर [illegible]

मनीआर्डर से [illegible]

आशीष दे। [illegible]

जानते हो [illegible]

[illegible]

[illegible] और

[illegible]

कृपा [illegible]

[illegible]

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



21/11/58

श्री पं० गोविन्द जी मिश्र

चौबुर्जी

मु० भरतपुर

(राजस्थान)

पहला मोड़

तीसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-



CABLES: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & Co.

AUTOMOBILE & CYCLE IMPORTERS & CONTRACTORS
BHARATPUR
(INDIA)

Ref. No. .... Date १२-५-४८

श्रीश्वर श्री परम पूज्यनीय श्री बाबा महाराज के
चरण कमलों में ....
जयशंकर स्वीकृत हो।

आशा है आप सकुशल रिषिकेष पहुंच गये होंगे पत्र आने पर ज्ञात होगा, आगे चन्द्रप्रभा की गोलियां भेजी जारही हैं सो कृपा इनको पहुंच देना। पंडित जी का स्वास्थ्य बहुसुन्दर है शेष सब कुशल हैं गत कल श्रीमान बाबू केशवदेव जी भी यहां पधारे हैं आज रावजी साहब अलवर गये हैं कृपया आगाडी के प्रोग्राम से सूचित करें। पंडित जी का जयशंकर स्वीकृत हो. श्रीमान बाबू गंगारामजी, पं. हरदेव जी, शिवप्रसाद जी व सब प्रेमियों को पंडितजी का जयशंकर पहुंचे जमोत्री से पंडित रामरत्न जी का पत्र आया है उन्होंने देवदत्त के बारे में पूछा है उनकी माता बहुत बीमार है देवदत्त को याद करती हैं।

आपका....

[illegible]

श्री

दसौंधीराम बनारसीदास

नयी मंडी

ला. रामदित्तामल

मुजफ्फरनगर

U. P.

Dr. R. C. GUPTA & Co.,

AUTOMOBILE & CYCLE IMPORTERS

AGRA MARBLE BUILDING
2nd FLOOR
DARESI No. 2
OPP. SHANKER HOTEL

DR. R. C. GUPTA & CO.
BHARATPUR.

Agra १-१०-194८.

श्री श्री १००८ श्री परम पूज्यनीय श्री अनन्त
श्री बाबा महाराज के चरणों कमलों में आपके
साष्टांग दण्डवत स्वीकार हो.
हित बुद्धि दास का

सेवा में कई पत्र भेजे गये परन्तु एक
को भी उत्तर नहीं मिला इसको बहुत चिन्ता है
हरिद्वार से भी कोई पत्र नहीं मिला सिर्फ एक पत्र
जैजै राम जी को पंडित जी के पास आया था
जिसमें समाचार हनुमान दास जी बाबत लिखा था
श्री पंडित जी का ~~स्वास्थ~~ स्वास्थ अभी वैसा ही है
कोई विशेष लाभ नहीं है चिन्ता अधिक रहती
रही है और हर समय रहती है यह उनकी
समझ में नहीं आता है कि अभी तक यह और क्यों
तक रोग पैदा हो गया है - श्रीमान जी अलवर
से आज वापिस आगये है स्थिति यथा पूर्व
ही है. पंडित जी का सादर प्रणाम स्वीकृत हो.
इस पत्र की प्रतीक्षा में हैं. स्वामियों का क्यों
निर्णय हुआ यह भी अभी तक नहीं जाता है.
आ. श्री हृ. प.

हनुमान दास जी का पत्र जो आया है वह
इसके साथ भेजा जारहा है

आपका.

- - - -

श्री बालविलास जी ने गालिब
ग्रन्थावली का ~~सूची~~पत्र भेजा है
और लिखा है जिन२ ग्रन्थों की आवश्यकता
हो चिन्ह लगाकर भेजिये आज्ञा
हो तो सूचीपत्र सेवामें भेज दिया जाये

थे इसी बीच में १ दिन जो कि मुझे याद नहीं है ऐसा
प्रतीत हुआ कि आंखों को श्री कृष्ण भगवान बाल रूप
धारण करके केवल १ मिनट को ओझल से दिखाई दिये
लेकिन मैंने कुछ विचार नहीं किया फिर लिखित विधि प्रतीत
हुआ कि तस्वीर में अर्जुन व भगवान साक्षात प्रतीत से
हुए लेकिन फिर कुछ नहीं यह दिन वगैरह मेरे को
कुछ भी याद नहीं है और कुछ भी मैंने नहीं किया है
अब जो आज्ञा हो किया जावे मैंने यह सब बातें पुस्तकी
से भी नहीं कही है और मेरी पीठ बहुत दुखती है
रीढ़ की जो हड्डी है नम्बर पर तो बहुत ही दर्द सा प्रतीत होता
है शायद यह सब आसन की वजह हो, आसन रोज
नित्य प्रति चल रहे हैं इति:

मेरी लिखाई बहुत खराब है व शब्द भी कहीं-
कहीं ठीक नहीं हुये है इसकी मैं आपसे हाथ
जोड़कर माफी मांगता हूं और आशा करता हूं
कि आप क्षमा कर पत्र अवश्य डालेंगे!

आपका आज्ञाकारी चरण
सेवक.

[illegible] लखनऊ

GRAMS: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & Co.

DIRECT IMPORTERS & EXPORTERS
AND
COMMISSION AGENTS
BHARATPUR

Ref. No. .... Date ....

To

कि मेरा विचार था कि "श्री भगवद्गीता" को आठवें
अध्याय को नित्य प्रति पाठ किया जावे लेकिन यह मुझ
से नहीं हो सकता था यही मेरी भावना थी लेकिन
अचानक मेरे मनमें ता. ५-६-४८ (५ जून शनिचरवार) को
सुबह ही स्नान के बाद मन में आई की आगे से ८ वां
नित्य प्रति १-१ अध्याय पाठ करके १८ दिनो में समाप्त
कर दिया जाय तदनुसार यह कार्य शुरु होगया और
ता. २२-६-४८ यानी २२ जून सोमवार को समाप्त होगया.
लेकिन इच्छा फिर भी रही फिर मैंने ता. २३-६-४८ से
आरम्भ कर दिया और १२-७-४८ (१२ जुलाई सोमवार
को समाप्त कर दिया। फिर इच्छा न रही तो सोमवार
से कुछ नहीं किया इसी बीच में कभी ५-५ या १०-१०
या १५-१५ मिनट को आसन तो आसन बन गया
यो बंद किया किन्तु २ दिन तो इतनी शान्ति के
साथ हो गया और किन्तु २ दिन विचार विकल्प होते

मैं कल एक पत्र और भेजा हूं। श्री ५. रावजी यहाँ से वृन्दावन
गये थे और वहाँ से सीधे देहली रवाना हो गये हैं
और उनको कुछ भी पता नहीं है। आपका पत्र जो पंडित
जी को [illegible] डाला था यथा समय मिल गया है
"श्री महाभाष्य" जो काश्मीर से कलकत्ते आया था और जो
मेरे पास है वह मैंने अन्दर कोठे में सन्दूक में बन्द करके
होशियारी से रख दिया था और ताली ताली के गुच्छे में
डाल दी थी, वह ताली का पूरा गुच्छा १० रोज से गायब हो
गया है मिल नहीं रहा है सो इस सन्दूक को १-२ रोज में
तुड़वा कर "श्री महाभाष्य" और जो पुस्तकें पंडित जी ले
जाती हैं उन सबको रजिस्ट्री द्वारा भेज दूंगा। जो देरी हो
उसके लिये क्षमा चाहता हूं। [illegible] पर अभी कब्जा नहीं।
चौकीदार है, आशा है [illegible] [illegible] पड़ [illegible]
जाय। आपने जो श्री गुरुजी को ता. २५-६-४८ को पत्र
लिखा था वह मैं उनके घर से अभी ले आया हूं और
मेरे लिए जो सन्देश भेजा है वह ठीक है
इस संबंध का विस्तार पूर्वक समाचार दे रहा हूं

GRAMS: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & Co.

DIRECT IMPORTERS & EXPORTERS
AND
COMMISSION AGENTS

BHARATPUR

Ref. No. .... Date १४-८-४८

To

श्री श्री १००८ श्री नागाजी
महाराज की पूज्य पादुकाओं
में सादर दण्डवत स्वीकार
हो.

श्रीमान्.

आपके कर कमलों द्वारा लिखा हुआ पत्र अषाढ़ ५-३
शु. वि. सं. २००५ का लिखा पढ़कर अत्यन्त आनन्द हुआ. श्री
गुरुजी के बारे में आपने पूछा है सो वह तो जब आपके
साथ गये थे श्री के देहली हैं अभी तक वापिस नहीं
आये. कारण यह है कि वह सोमवार को वापिस
आ रहे थे परन्तु गाड़ी निकल जाने से रुक गये
और फिर उन्हें बुखार हो आया दूसरे दिन जब
तबियत कुछ ठीक हुई तो वृक्ष के नीचे बैठकर स्नान
करीबन १ घण्टे तक करते रहे सो बुखार का जोर हो
गया और मोतीझरा निकल आया श्री [illegible] जी
भी गये थे और मैं भी [illegible] [illegible] [illegible] है
तबियत पहिले से ठीक है २ रोज से [illegible] [illegible]
हुआ है वह आज [illegible] [illegible] [illegible] तो आपको [illegible]

C. No.

Date Stamp



Time of { Booking / Receipt

From

By

The sequence of entries at the begining of this telegram is— class of telegram, time handed in, serial number, office of origin, date, service instructions (if any) and number of words.

This form must accompany any enquiry respecting this telegram.

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

TELEGRAM

Address 0450

SECOND FOLD

SHRI SWAMIJI AMRITVAGBHAVACHARYA
CARE CHIMANLAL MODI 90 JEERA SECUNDERABAD

FIRST FOLD

O 1615 N 158 POONA CITY 23 37

= YOUR LETTER RECD SHRI PARKHEJI OUT OF STATION STOP SHRI SUDHAKARJI AND MYSELF STAYING HERE VERY EAGER TO MEET YOU STOP WIRE WHICH TRAIN ARRIVING = SAVALAPURKAR =

Receive ~~10 Am~~ Poona saturday 10 Am

~~Received~~ reaching poona saturday ~~at ten hourly~~

dl. 23-12-66—50,000 Bks.

॥श्री:॥

भरतपुर
दिनाङ्क 10-7-75
गुरुवार

सेवामें

परम श्रद्धेय श्रीश्रीजी महाराजजी के पावन-चरणकमलों में करबद्ध प्रणाम ज्ञात हो।

आपका श्री रतनलालजी के माध्यम से प्रेषित पत्र आदरणीय पंडितजी के यहाँ पढ़ा। आपके पैर के जख्म की स्थिति के बारे में पढ़कर अति दुःख हुआ। पैर की पीड़ा शीघ्र ही ठीक होने के लिये आपकी ही आज्ञा से विशेष प्रार्थना आज रात्रि से ही प्रारम्भ कर रहा हूँ। आप यहाँ हाथ की गिल्टी से परेशान थे। यह पीड़ा भी जगदम्बा शीघ्र ही दूर करेंगी। आप भगवान् को स्वीकार हो। इसमें आप स्वयं की इच्छामात्र ही है। आप सर्वसामर्थ्यवान् हैं।

आपकी आज्ञा से ही दिनाङ्क 17-7-75 तथा 23-7-75 के पुण्य एवं कल्याणकारी पर्व के शुभ अवसर पर विशेष पूजा, प्रार्थना आदि रक्खूँगा। शेष आपकी कृपा है।

इस पत्र से पूर्व दो पत्र श्री बलजिन्नाथजी शास्त्रीजी के पते से सेवामें प्रस्तुत कर चुका हूँ। आपको मिलने का कोई समाचार नहीं है।

यहाँ पं०जी सकुशल हैं। श्री चरणीचरजी भैयाजी, बल्लोजी भैयाजी तथा सुश्री अनुसुइयाजी का शुभ विवाह आपकी कृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हो गये हैं।

इस सत्र में मैं पुनः पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से बी०ए० अर्थशास्त्र केवल की परीक्षा देना चाहता हूँ। आपकी उचित आज्ञा चाहता हूँ। यदि कोई विश्वविद्यालय कार्य में कोई प्रेमी सज्जन हो तो दयाकर लिखवाने की कृपा करें।

यहाँ वर्षा 62.21 मिलि मीटर औसतन हो चुकी है, लेकिन गर्मी पूर्ववत ही है।

श्री पं०जी का कोटिशः प्रणाम स्वीकार हो। अन्य समस्त प्रेमी सज्जनों का भी प्रणाम ज्ञात हो।

आपका अपना ही —
[signature] 10/7/75
(छोटेलाल)

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सामने

श्री श्रीजी C/o पं० श्री जटाशंकर जी
सोहाना (SOHANA);
निकट चण्डीगढ़ (CHANDIGARH)

पिन PIN

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

पिन PIN

10/7/78

इसके पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

॥श्रीः॥

भरतपुर
दिनाङ्क २३।७।८१

सेवामें

परमादरणीय श्री भगवन् महाराजजी

आपके श्रीचरणारविन्दों में ढोक एवं करबद्ध प्रार्थना स्वी[illegible]
पूर्व निर्धारित तिथि पर दिल्ली आकर आपके दर्शन नहीं कर सका और न ही सूच[illegible]
सेवामें पत्र-प्रेषण ही कर सका। अतः मुझे क्षमा करने की कृपा करेंगे। इसके लिये
दया-दृष्टि अवश्य होगी।

श्री महाराजजी! दिल्ली [illegible] आने का प्रमुख कारण राजकीय [illegible]
की देखभाल तथा उसके चार्ज लेने के थे। अभी सम्पूर्ण-चार्ज सम्भलवाया नहीं [illegible]
आपकी कृपा से शीघ्र ही सम्भाल लूँगा। नयी जुम्मेदारी की व्यवस्था ठीक होने पर [illegible]
दर्शन के लिये तुरन्त ही चल दूँगा। आपकी अपनी कृपा है, जब आप दर्शन देंगे [illegible]
उपलब्ध हो सकेंगे। आपको पुनः बारम्बार नमस्कार तथा कोटिशः जयशङ्कर की ज्ञात [illegible]

मैं पण्डितजी के घर पर गया। उनके समाचार ठीक हैं। रोगोपचार कर र[illegible]
और शरीर से तो अस्वस्थ हैं ही हैं। उनकी भी आपके दर्शन की बहुत अभिलाषा थी, लेकिन
अस्वस्थता के कारण असमर्थ हैं। उनका यथायोग्य जयशंकर की मालूम हो।

श्री सम्पूर्णदत्तजी पण्डितजी का भी यथोचित जयशंकर मालूम हो। उन[illegible]
पिताजी का निधन दिनाङ्क २-७-८१ को हो गया था।

शेष सब आपकी कृपा है।

माताजी पिताजी एवं घर के सभी [illegible] का यथायोग्य जयशंकर - ढोक ज्ञात हो। गृहणी [illegible]
ढोक एवं जयशंकर मालूम हो। सेवार्पित।

आपका ही — [illegible] २३।७।८१।

यहाँ काटें TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें 23/9/81

श्री श्रीजी महाराजजी C/o
श्री सीतारामजी, B 66 साउथ मोतीबाग
(साउथ नं० 2)
नई दिल्ली (NEW DELHI)

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :

छोटेलाल,
श्री सन्तोष सदन, मथुरा गेट,
भरतपुर (राज०)

पिन PIN 321001



||SHRI||

Bharatpur

Dated 29th June, 1978

Thursday

...में

परमादरणीय एवं श्रद्धेय श्री महाराजजी के श्रीचरणारविन्दों में साष्टाङ्ग प्रणाम एवं कोटिशः ज...

शङ्करजी की ज्ञात हो।

आपकी परम कृपा से सब कुशलपूर्वक हैं।

मैंने आपकी सेवामें पूर्व में एक पत्र प्रेषित किया था जो सम्भवतः आपको प्राप्त हो गया होगा। अब श्रीभगवान् की कृपा से आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक होगा। आदरणीय पण्डितजी के यहाँ मुझे ज्ञात हुआ है कि आपका स्वास्थ्य ठीक है। मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई। मेरा तो आप श्री भगवन् से यही प्रार्थना है कि आप ...स्थ्य ठीक रक्खें। यह सब आपकी अपनी मौज है — अपनी सामर्थ्य व इच्छा मात्र है। जगदम्बा से यही ... है कि आपका प्रकाश हमें सदैव मिलता रहे तथा अन्त में आपके अपने स्वयं में लय हो जायें। आपकी ... लेश मात्र दया से सर्व सम्भव है। आपको बारम्बार प्रणाम - प्रणाम है।

अबकी बार अधिक व्यस्तता के कारण आपकी सेवामें नियमित रूप से व अधिक... तक नहीं रह सका। इसके लिये मुझे खेद है। आप कृपा करेंगे एवं शक्ति देंगे क्योंकि आप सर्वशक्तिमान हैं त... आप कृपा अवश्य करते हैं। यह मेरा पूर्ण विश्वास है और मुझे अवश्य सान्त्वना देंगे — उठायेंगे — कृपा के... दया से निहारेंगे। पुनः आपको अनन्त जय जय शंकर ज्ञात हो।

पिछले ~~कुछ~~ कई दिनों से पण्डितजी की तबीयत ठीक नहीं थी। अब ठीक है तथा ... उनका आपको जयशंकर की ज्ञात हो।

यहाँ से सब सज्जनों व मिलने वालों का जयशंकर की ज्ञात हो।

यहाँ भी वर्षा प्रारम्भ हो गई है। गर्मी अभी बहुत है। कई वर्षा के पश्च...

शेष आपकी कृपा है।

आपका अपना वत्स

[signature]

(छोटेलाल) 29/6/78

पहले यहाँ पर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

20 INDIA

सेवामें श्री/578

श्री श्रीजी महाराजजी C/o श्रीसुभाषजी शर्मा
दया- भवन, निकट रेल्वे लाइन
सोलन (SOLAN)
(हिमाचल प्रदेश)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

CHHOTEY LAL,
Shri Santosh Sadan, Mathura Ga...
Bharatpur.

पिन PIN 321001



भरपूर फसल के लिये...

जी.एस.एफ.सी. यूरिया

॥श्री:॥

भरतपुर
दिनाङ्क 3-1-1978

परमादरणीय एवं श्रद्धेय महामहिम महाराजजी की सेवा में अनन्त श्री जयशङ्करजी के चरण कमल की पावन श्री गङ्गा-तीर्थ में पवित्र स्नान तथा कोटिशः जयजयकार।

आपकी कृपा से मैं भरतपुर सकुशल पहुँच गया हूँ। जनता ऐक्स[illegible] 15 (दोपहरोपरान्त) भरतपुर के लिये प्रस्थान किया था तथा भरतपुर 7.30 बजे पहुँची [illegible]ङ्क 2-1-78 को आदरणीय श्री पण्डितजी महाराज के यहाँ गया। श्री धर्मेश्वरजी दि० 2-1-[illegible] 5 बजे बरेली से आ गये थे। पण्डितजी का स्वास्थ्य अब ठीक है। आप अभी [illegible] ठहरे हुये हैं। श्री धर्मेश्वरजी ने भी आज आपकी सेवा में पत्र प्रस्तुत किया [illegible]ोरेश्वरजी भी यहीं ठहरे हुये हैं। श्री जयपुर वाले पण्डितजी के केश का अभी कोई [illegible] हुआ है। यहाँ के सब समाचार ठीक हैं। ठंड यहाँ भी पड़ रही है।

पुस्तक में धनराशि 202 रुपये 30 पैसे की है। आप जैसी आज्ञा देंगे [illegible]दनुसार पालना करूँगा।

अवशिष्ट आपकी दया-दृष्टि है।

गत वर्ष समाप्ति तथा नव वर्ष ~~आगम~~ आगमन पर आपके दर्शन-लाभ कर [illegible]तकृत्य हो गया।

आपको पुनः बारम्बार नमस्कार नमस्कार है।

श्रीमान् बाबूजी तथा उनके समस्त परिवारीजनों को यथायोग्य जयशङ्कर की ज्ञात हो। [illegible]त सज्जनों को भी यथोचित जयशंकर ज्ञात हो। श्री रतनलालजी एवं श्री पण्डितजी श्री भवा[illegible] सुपुत्र महोदय (सम्भवतया श्री रविशंकरजी) को जयशंकर ज्ञात हो।

आपकी कृपा-कटाक्ष [illegible]
आपका अपना
[signature]
(छोटेलाल[illegible]

श्री श्रीजी महाराजजी

श्री सीतारामजी,

B 66, मोती बाग II (सैकण्ड),

नई दिल्ली (NEW DELHI)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

CHHOTEY LAL

SANTOSH SADAN MATH

GATE BHARATPUR (R

पिन PIN 321001

बुखार!

हो सकता है मलेरिया ही हो!

क्लोरोक्विन गोलियां लें

श्री

भरतपुर
4.3.77

(प)रमानन्द श्री "श्री जी महाराज के
पूज्यपाद चरण कमलों में
दासानुदास ओमप्रकाश का दण्डवत स्वीकृत हो।
काफी समय के बाद आज तक इन्तजार करने पर भी
आपकी कुशलता का कोई समाचार नहीं मिला
भी यहां पर पूज्यश्री ताऊ जी को काफी
हो रही थी लेकिन यह काल दिल्ली
(श्री)मान रतनलाल जी का पत्र आने पर मालूम
(हुआ) था कि आप इस समय जम्मू विराज रहे हैं।
(आप)का स्वास्थ्य तो अब बिलकुल ठीक होगा
जलवायु परिवर्तन हो ही गया है।
(यहां प)र ताऊजी का स्वास्थ्य भी ठीक ही है।
(ए)क 28 फरवरी की रात्री को श्री धर्मेश्वर
(डा)क्टर एक माह की ट्रेनिंग के लिए
गये हैं। हेतु वो भी आपके लिए जयपुर से
लिखने के लिए कह गये थे। यहां पर
गत काल दिनांक 3.3.77 को [illegible]
(इ)से समय में आ गये हैं वह सब आपको
(न)मस्कार कह रहे हैं। मेरी परीक्षा का
(प)रिणाम दिनांक 28.2.77 [illegible]

मैं उसमें फेल हो गया हूं मेरा [illegible]
केवल एक ही पर्चा मेरा हुआ है वह
जिसके पेपर मुझे कोई खास अच्छे [illegible]
अब मेरा मन नौकरी में नहीं लगता है
परेशान तो रहता हूं अब तो आप ही
मार्गदर्शन करें, अब मुझे कोई वि[illegible]
की उमंग मेरे अन्दर नहीं रही है।
नाम जाता को जाता हूं जैसी कोई [illegible]
केवल चलरही हो बस यही मेरा
रहा है, मैं क्या करूं मुझे अब
है कि मैं अपने जीवन में कुछ
पर नहीं, मैं आपको यह पूछना [illegible]
चाहता था लेकिन फिर भी मन [illegible]
इसलिए लिख दिया है, इससे आ[illegible]
कागज में डाल दिया, उसके लि[illegible]
अल्पबुद्धि की भूल को क्षमा क[illegible]
श्री कैलाश भाईसाहब एवं उनको ध[illegible]
आपको साष्टांग दण्डवत कह रहे हैं श्री
पद्मासरन शास्त्री जी एवं छोटे भाई [illegible]
एवं श्री सियाराम जी पुजारी [illegible]
आपको साष्टांग दण्डवत कह रहे [illegible]

श्री ताऊ जी एवं बुआ जी आपके चरण
कमलों में सापवीय दण्डवत कह रहे हैं।
सभी मिलने वालों को ताऊजी की ओर से
जयश्रीकृष्ण को स्वीकृत हो।
अपने स्वास्थ्य के विषय में हमें अवश्य
खबर देते रहें जिससे हमारे मन मानसिक
संतोष हो जाय।
मुझे इन दिनों में आपकी बहुत
याद आती है, लेकिन मैं कुछ समझ नहीं
हूँ मेरी त्रुटियों को क्षमा कर देना।
शेष कुशल है सभी को मेरा
जयश्रीकृष्ण ज्ञात हो।

दासानुदास
ओमप्रकाश [illegible]
५-४-७७

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



To
SHRI "SHRIJI MAHARAJ"
C/o SHRI K.K. Anand
18 A/B. first floor
Gandhinagar
JAMMU (Tawi)
पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLO[WED]
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRE[SS]
[illegible]
पिन PIN

श्री: भरतपुर
17/6/78

श्री "श्री जी" महाराज के
सादर चरण कमलों में दासानुदास
...प्रकाश के साष्टांग दण्डवत स्वीकार हों।

समयाभाव के कारण आपको पत्र नहीं लिख सका
के लिए क्षमा चाहता हूँ क्योंकि आफिस प्रात:
... जाता हूँ और रात्री को 6.30 बजे वापिस
...ता हूँ रोजना पत्र लिखने की सोचता हूँ लेकिन
... मिलने तथा ऑफिस के कामों में भूल जाता
... आपको पत्र लिख रहा हूँ देरी के लिए
क्षमा(?) ... यहां गर्मी अधिक पड़ रही है। अभी
... काफी गर्म है। आपका स्वास्थ्य पूर्वपेक्षा ठीक है
जानकर प्रसन्नता हुयी। पूज्य श्री ताऊ जी एवं बुआ
... स्वास्थ ठीक है। तथा आपको साष्टांग दण्डवत
...हे हैं। आदरणीय [illegible] व बन्नो भाई साहब
...की ग्रहणी का आपको जयशंकर करते हैं तथा
...श्वर जी का भी जयशंकर करते हैं।
...मी जाड़ि के लिए निश्चित प्रतीक्षा
... लिये कार्ड आया है। जिसके
...में जोधपुर जाना ... है

23/6/78 को होली में शुक्र
को प्रात: की गाड़ी से आ रहा हूँ आपकी
की अनुकम्पा से अवश्य सफलता मिले
आपका आशीर्वाद है वहां सभी प्रेमी
को यहां से सभी का जयशंकर करते हैं।
शेष सभी आपके आशीर्वाद से ...
त्रुटियों के लिए क्षमा चाहता हूँ।

आप अपने स्वास्थ्य के समाचार अवश्य
लिखा दिया करें। आपकी बड़ी अनुकम्पा ...

शेष शिव:

दासानुदास
ओमप्रकाश(?)

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



श्री सुभाष शर्मा
श्याम भवन
(रेलवे लाइन के नीचे)
सोलन SOLAN
(हिमाचल प्रदेश)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :

ओमप्रकाश शर्मा
...
भरतपुर
...

पिन PIN

17/6/78



॥श्रीः॥ भरतपुर

दिनाङ्क 8 जुलाई 1975

मंगलवार।

में

श्री भगवत्-चरण कमलों में करबद्ध साष्टाङ्ग प्रणाम ज्ञात हो।

यहाँ आपकी मंगलमय कृपा एवं दयादृष्टि से सब कुशल-क्षेम से हैं।

आप अनन्त श्रीजी भगवान्‌जी को कोटिशः नमस्कार नमस्कार ज्ञात हो

श्री पंडितजी कुशलपूर्वक हैं। उनका आपको बारम्बार जयशङ्कर ज्ञात हो। यहाँ श्री धरणीधर भैयाजी

[illegible]ल्लो भैयाजी तथा सुश्री अनुसुइयाजी का शुभ विवाह ठीक प्रकार सम्पन्न हो गया है। आपकी [illegible]

[illegible] कोई कठिनाई नहीं आयी है।

श्री ज्योतिषी महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। वे अशक्त [illegible]

[illegible]ह तो हैं ही हैं। शेष आपकी मौज है।

यहाँ वर्षा होने से पहिले की अपेक्षा गर्मी कम है। अवशिष्ट आप सब जाननहार

हो।

सुश्री माताजी, माँजी एवं धर्मजी तथा मेरे पिताजी को कोटिशः जयशङ्कर ज्ञात हो।

दिनाङ्क 17 जुलाई के आने वाले पवित्र दिवस पर मेरा श्री श्रीजी-चरणशरण की पावन-कैवल्य रज में जयशङ्कर

ज्ञात हो।

श्री शास्त्रीजी को सादर करबद्ध प्रणाम ज्ञात हो।

आपका अपना वत्स —

[signature]

(छोटेलाल)

यहाँ काट कर खोलिए To open cut here →

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें

श्रद्धेय श्री श्रीजी महाराज जी
c/o श्रीमान् पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री,
संस्कृत विभाग,
हिमाचल संस्कृत विश्वविद्यालय,
समरहिल — शिमला — 5
(SHIMLA-5)
पिन PIN

पहला मोड़ First fold

← तीसरा मोड़ Third fold →

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

8/4/75

छोटेलाल,
सन्तोष सदन मथुरा गेट
भरतपुर (राज०)

पिन PIN

पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

॥श्रीः॥

भरतपुर,

दिनाङ्क 31-5-81

सेवामें

परमादरणीय श्री महाराजजी !

करबद्ध श्रीचरणारविन्दों में साष्टाङ्ग ढोक एवं अनन्त श्री जयशङ्कर जयशङ्कर की ज्ञात हो।

आपकी कृपा से सर्व कुशलक्षेम है।

आपका दिनाङ्क 11-5-81 का आशीर्वाद-पत्र प्राप्त हुआ। अत्यन्त प्रसन्नता हुई एवं शुभ विवाहोत्सव को सानन्द सम्पन्न कराने की शक्ति प्राप्त हुई। आपकी परम दया-दृ तथा आपके दिव्य प्रकाश से समस्त विवाहकार्य हर्षपूर्वक सम्पन्न हो गये हैं। आपकी कृपा समस्त कल्याण है। आपकी जयजयकार है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप पूर्ण स्वस्थ रहें तथा अपना दिव प्रकाश सदैव प्रदान कर हमें आलोकित करते रहें।

आपकी कृपा से "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" में वर्णित निम्नलिखित पंक्तियों की भावनानुसार कन्या के पीले हाथ कर दिये हैं:-

" अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।"

आपकी कृपा, दया एवं आशीष से यह सब सम्भव हुआ है। अतः आपको पुनः बारम्बार जयशंकर जयशंकर की ज्ञात हो।

पिताजी का बहुत २ जयशंकर की मालूम हो। आपका कृपा-पत्र प्राप्त कर उन्हें बहुत खुशी हुई। गृहणी एवं सभी बच्चों का ढोक मालूम हो।

पं०जी के सब कुशल समाचार है। उनका जयशंकर ज्ञात हो। श्री धर्मेश्वरजी से दो बार सम्पर्क हुआ। उनका श्री जयशंकर ज्ञात हो। अब पं०जी के यहाँ जाकर पुनः पत्र सेवार्पित करूँगा।

शेष सब आपकी कृपा है।

बाबूजी श्री सीतारामजी तथा श्री रतनलालजी को जयशंकर की ज्ञात हो। श्री रविजी त्रिवेदीजी को भी जयशंकर की ज्ञात हो। अन्य सभी सज्जनों तथा सुहृदयों को भी यथोचित जयशंकर की मालूम हो।

अन्त में आपको पुनः बारम्बार नमस्कार वन्दना एवं जयशंकर की ज्ञात हो।

सादर सेवार्पित।

आपका अपना ही वत्स-
[signature] 31/5/81
(छोटेलाल)

श्री महाराजजी!

करबद्ध अनंत ढोक एवं जयशंकर की ज्ञात हो।

प्रस्तुत पत्र दि० 31-5-81 को सेवामें लिक्खा गया था, लेकिन पं०जी के यहाँ जाना सम्भव नहीं हो सका। अब श्री धर्मेश्वरजी से वार्ता होने पर यह पत्र सेवामें प्रेषित कर रहा हूँ। कृपा करें। अति बिलम्ब के लिये क्षमा-याचना की प्रार्थना है। आपको पुनः जयशंकर की।
[signature] 6/7/81

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें 31/5/81

श्री 'श्रीजी' महाराजजी C/o श्री सीतारामजी
B 66 मोती बाग II (साउथ नं० 2)
नई दिल्ली (NEW DELHI)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

छोटेलाल
श्रीसन्तोष सदन
मथुरा गेट, भरतपुर (राज०)
पिन PIN 321001

॥ श्रीः ॥

भरतपुर

दिनाङ्क 19-8-81

सेवामें

परमादरणीय एवं श्रद्धेय श्री भगवन् महाराजजी !

आपके परम पावन चरण-शरण में साष्टाङ्ग दण्डवत एवं अनन्त कोटिशः जयशङ्कर जयशङ्कर की ज्ञापित हो।

आपकी परम कृपा से हम कुशल क्षेम में हैं। श्री ईश्वर एवं जगदम्बा भगवती से सदैव यही प्रार्थना है कि आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहे तथा हमें सदैव ज्ञान-प्रकाश रूपी महाप्रसाद प्रदान करते रहें और दर्शन-लाभ प्राप्त कर कृतकृत्य होते रहें। साथ ही सविनय वन्दना है कि आपकी कृपा सदैव बनी रहे तथा दया-दृष्टि सदा रहे। आपको पुनः नमस्कार नमस्कार है।

प्रस्तुत पत्र-लेखन में बिलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

पुत्री 'इन्दिरा' की शादी के उपरान्त एक पत्र सेवामें प्रेषित किया था, जो कि आपको प्राप्त हो गया होगा। आपकी कृपा से विवाह सानन्द सम्पन्न हो गया। हरित तृतीया के पश्चात् मैं आदरणीय पण्डितजी के यहाँ गया था। उनका स्वास्थ्य ऐसा ही रहता है। माँजी भी वृद्ध हैं, वे भी कमजोरी अनुभव करती श्री धर्मेश्वरजी अपने कार्य में व्यस्त रहते ही हैं। सभी का यथायोग्य जयशङ्कर की ज्ञापित हो।

मेरी आपके दर्शन करने की बहुत उत्कण्ठा सदैव रहती है। अतएव प्रार्थना है कि आपके दिल्ली में उपलब्धि की समयावधि से सूचित कराने की कृपा करें। ताकि मैं दिल्ली आकर आपके दर्शन-लाभ कर कृतकृत्य हो जाऊँ। भरतपुर में गर्मी काफी पड़ रही है तथा मच्छरों का अति प्रकोप है।

घर के सभी सदस्यों का करबद्ध जयशंकर की ज्ञात हो। लल्लीजी इन्दिरा का भी यथोचित जयशंकर मालूम हो। बाबूजी श्री सीतारामजी एवं उनके परिवारी सदस्यों को जयशंकर की मालूम हो। बाबूजी श्री रतनलालजी, श्री रविशंकर जी त्रिवेदीजी तथा अन्य समस्त सज्जनों को भी यथोचित जयशंकर की ज्ञात हो।

शेष सब कृपा है। आपकी दया-दृष्टि है।

आपका वत्स- [signature] 19/8/81

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें

श्री श्रीजी महाराजजी C/o
श्री सीतारामजी B 66 साउथ
मोतीबाग (MOTIBAGH)
साउथ नं० 2 नयी दिल्ली
(NEW DELHI)

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

CHHOTEY LAL
Sri Santosh Sadan,
Mathura Gate, Bharatpur
(Raj.),
पिन PIN 321001,

19/8/87

पहला मोड़ FIRST FOLD

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

॥श्रीः॥ भरतपुर
दिनाङ्क २४।९।८१

सेवामें

परमादरणीय एवं श्रद्धेय श्री महामहिम महाराजजी !

करबद्ध श्रीचरणारविन्दों में साष्टाङ्ग ढोक एवं प्रार्थना-वन्दना।

आपका बाबूजी श्री रतनलालजी द्वारा लिखित पत्र प्राप्त हुआ। प्रस्तुत पत्र से पूर्व मैं एक पत्र सेवामें प्रेषित कर चुका हूँ। पूर्व निर्धारित तिथि को दिल्ली आकर आपके दर्शन नहीं कर सका — इसके लिये मुझे क्षमा करने की कृपा करें। उक्त तिथि (दिनाङ्क १०-९-८१ तक) दिल्ली नहीं आने का प्रमुख कारण राजकीय क्षेत्र सेवर की देखभाल तथा उसके चार्ज सम्भालने का ही था। मैं आपकी दया-दृष्टि तथा परम आशीर्वाद से सपरिवार कुशल-क्षेम में हूँ। मुझे आपके स्वास्थ्य के प्रति अति चिन्ता रहती है। इसके लिये मैं श्री जगदम्बा से सदैव प्रार्थना करता रहता हूँ। आप पूर्ण स्वस्थ रहें और सदा-सदैव प्रकाश देते रहें — यही परमात्मा से प्रार्थना है। आपकी बड़ी कृपा है। किन शब्दों में लिखकर अभिव्यक्त करूँ। निर्देशनानुसार मौन रहकर आत्मविलासानन्द की अनुभूति आपकी अपनी परम कृपा, दया तथा आशीष ही है।

मैं दिनाङ्क 4-10-81 (रविवार) अथवा दिनाङ्क 13-10-81 (शरद पूर्णिमा) को आकर आपके दर्शनलाभ कर धन्य हो जाऊँगा। आप कृपा करें। पुस्तकों का सैट लेता आऊँगा।

शेष सब आपकी कृपा है।

पण्डितजी के सब कुशल समाचार हैं। श्री ओमप्रकाशजी कुशल पूर्वक है। पं०जी श्री सम्पूर्णदत्तजी कुशल पूर्वक हैं। उनके पिताजी के विषय में पूर्व पत्र में लिख ही चुका हूँ। आपको अवगत हो ही गया होगा। सबका य[illegible] जयशंकर की ज्ञात हो। अन्य सभी प्रेमियों तथा सज्जनों [illegible] की ज्ञात हो। गृहणी का ढोक तथा सभी बच्चों का भी ढोक वन्दना मालूम हो। आपका अपना ही — [illegible] २४।९।८१

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें
श्री श्रीजी महाराजजी c/o
श्री रत्नलालजी
R. P. S. – 286
मदनगीर (MADANGIR)
नई दिल्ली – 62
(New Delhi – 62)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

CHHOTEY LAL,
Shri Santosh Sadan Mathura Gate, Bharatpur (Raj.).
पिन PIN 321001.

28/8/87

पहले यहां पर काटिए TO OPEN CUT HERE

॥श्रीः॥

भरतपुर
दिनाङ्क 30-8-81
(इतवार)

सेवामें

परमादरणीय एवं श्रद्धेय,

श्रीभगवन् महाराजजी के श्रीचरणारविन्दों में करबद्ध साष्टाङ्ग ढोक

एवं अनन्त जयशंकर वन्दना ज्ञात हो।

यहाँ आपकी कृपा-दृष्टि से हम सपरिवार सकुशल हैं। आपका

दिनाङ्क 24 अगस्त 1981 का पत्र प्राप्त हुआ। पढ़कर अत्यन्त आत्मानन्द हुआ। आपके दर्शन

की आज्ञा मिलने से बड़ी खुशी हुई और ऐसा अनुभव हुआ कि आप स्वयं दर्शन देकर दया-दृष्टि

अपने आप को स्वयं निहार रहे हैं, धन्य धन्य कर रहे हैं। आपकी कृपा-कटाक्ष समस्त खुशी

प्रदायिनी है। बस यही जानता हूँ।

आपके निर्देशानुसार श्री ग्रन्थमाला का एक पूरा सैट सभी उपलब्ध पुस्तकों

का दिनाङ्क 10-9-81 तक लेता आऊँगा एवं 'श्री परशुरामस्तोत्रम्' को 5-7 प्रतियाँ भी और लेता आऊँगा।

पंडितजी के घर सब कुशल मंगल है। उनका स्वास्थ्य तो ऐसा ही रहता है। उनके घर के सभी सदस्यों

का यथायोग्य नमस्कार जयशंकर की ज्ञात हो।

श्री पंडितजी श्री सम्पूर्ण दत्तजी के कुशल समाचार हैं। उनका जयशंकर की

ज्ञापित हो। मिलने पर कभी २ वे आपके समाचार पूछते रहते हैं। कई बार आपका दिल्ली का पता

भी लिखवाया है।

घर के सभी बच्चों तथा माताजी पिताजी का करबद्ध अनन्त जयशंकर की

ज्ञात हो। ~~[illegible]~~ गृहणी का ढोक ज्ञात हो। श्री भगवान् से प्रार्थना है कि आपका स्वास्थ्य ठीक बना रहे, प्रसन्नता

पूर्वक प्रशस्त मार्ग का प्रकाश देते रहे और सदा-सदैव आपका वरदहस्त का अनन्त व अनश्वर आशीष

रहे। यही जगदम्बा से प्रार्थना है। आपके प्रार्थना [illegible] के लिये कोटिशः जयशंकर २ की ज्ञात हो।

विशेष समाचार यह है कि इस समय राजकीय बीज उत्पादक क्षेत्र, सेवर जिला भरतपुर पर क्षेत्र प्रबन्धक के पद पर लगा हुआ हूँ। दिनाङ्क 6-8-81 को ज्ञात हो जायेगा कि इस पद पर आगे भी कार्य करना है अथवा नहीं। अभी मामूली सा ही कार्य भार सम्भाला गया है। अगले आदेशों की प्रतीक्षा के कारण आपके दर्शन दिनाङ्क 10-8-81 तक कर पाऊँगा। कृपा कर क्षमा करें।

शेष आपकी कृपा।

आपका ही वत्स

[signature] 30/8/81

(CHHOTEY LAL)

श्री बाबूजी सीतारामजी,
श्री रतनलालजी तथा अन्य समस्त सज्जनों को जयशंकर की ज्ञात हो।

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



30/8/81

सेवामें

~~श्री श्रीजी महाराजजी C/o श्री सीतारामजी तंवर~~
~~B-66 मोतीबाग-II (साउथ) नई~~
~~दिल्ली (NEW DELHI)~~

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

FIRST FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

CHHOTEY LAL,

Shri Santosh Sadan Mathura Gate Bharatpur

पिन PIN 321001.

TELEPHONE NO.

TELEGRAM : JAIN

N. L. JAIN & SONS.
BUDHKIHAT
BHARATPUR (RAJASTHAN).

Date 196

अनन्त श्री पूज्यपाद श्री बाबा महाराजके पुनीत पाद पद्मोंमें
कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वतः कुशलमस्तु।
अभी २ पत्र मिला, उत्तरमें निवेदन है कि मैं श्री ज्योतिषीजी
महाराज विशेष कार्यके कारण सोमवारको श्री चरणोंके दर्शन
करूंगा अतः यह प्रार्थना है कि सोमवार तक वहीं विराजें।
श्री जैन सा. का प्रणाम स्वीकृत हो। ये कल यहां आगये हैं
इनका स्वास्थ्य भी अभी अच्छा नहीं है।
श्री मनोहरलालजी गत कल हस्पताल दाखिल होगये हैं
ऐसा श्री शरणजीने लिखा है, दोनोंका प्रणाम स्वीकृत हो।
श्री लक्खोजीने भी अभी खाट नहीं छोड़ी है, उनका
प्रणाम स्वीकार हो।
श्री सम्पूर्णदत्तजी भी भरतपुर ही हैं चोलपुर भी वे सन्तुष्ट
नहीं है। शेष मिलने पर प्रत्यक्षमें।

आपका
मिश्र गोविन्द

मैंने एक पत्र यहांसे और भेजा था वह नहीं मिला उसमें
२००) रु. श्री वरकलेजीको भेजदिये हैं यही विशेष बात थी,
श्री पुरोहितजी भी अस्वस्थ हैं। श्री रामस्वरूपजी प्रणाम करते हैं
पं.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



EXPRESS DELIVERY



"श्रीजी" 209
c/o
पं. वैष्णवी दास बरसानी
V. D. बरसानी
हिन्दुस्तान हाउसिंग फैक्टरी
कोठी नं. २३ जंगपुरा
दिल्ली नं. १४

← तीसरा मोड़ Third fold →

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—

मिश्र गोविन्द
चौबेजी
भरतपुर

25/11/62

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

श्रीरूप पदु: निम्नगत समुद्धरण पाठिङ्नायै नमः
जैपुरसे श्री हरिशास्त्री, हमे श्रीस्मामनदजी ने पुरवाय
लिखवे

आगये होंगे

यहां श्री लक्खोजी बीमार है अब
ज्वर तो कम है पर छाती में दर्द होगया है
कलसे

पहले पत्र में मैंने प्रेस लगाने के
बारे में लिखा था यदि आप उचित
समझें तो ठीक ही रहेगा, श्री गो
राज शरणजी आर्थिक सहयोग
देने को उद्यत है। अब तक कोई पारलेजी
का दूसरा पत्र तो आया नहीं आप इधर कब
पधार रहे हैं यदि उचित हो तो लिखें
मुझे चिन्ता की कोई बात नहीं सब ठीक होगा।
केवल आपकी चरण कृपा बनी रहे यही
कामना है। शेष कुशल है। आपका-
गोविन्द

श्री विश्वम्भरदयालजी को प्रणाम कहते हैं।

आज श्री पं० परशुरामजी का पत्र मनोहरपुर
से आया है उन्हीं की लिखी पंक्तियां लिखता हूं
प्रणामानन्तर वे लिखते हैं कि "श्री महाराजकी
वे प्रेरणायें अब आपके रहते हुए स्वप्नवत क्यों होते
जा रही हैं। कहां तो वे योजनायें बहुत शीघ्र कार्यान्वित
होने की आशा हृदय में लहरें लगाती थीं और कहां वे अब
सब मनोरञ्जन की सी बातें हो गईं। श्री स्वाध्यायका
प्रकाशन, ब्रह्मशक्ति पत्रिका का प्रकाशन और
श्री कैला देवी महाविद्यालय, और ब्राह्मण समाज
का संगठन आदि कार्य क्या कल्पना तक ही सीमित रहेंगे
श्रीजी महाराज के चरणों में साष्टांग प्रणाम के साथ ही
सबका उत्तर पाकर आप अपनी सम्मति सहित सूचना
देने की कृपा करेंगे। आगे कुछ पंक्तियां लिखने के पश्चात्
उन्होंने लिखा है कि "मेरे विचारों में अनेक प्रकार से
उथल पुथल है जैसा कि भविष्यत् के कार्यक्रम के विषय में
आपसे जानकारी चाही है। समय बड़े वेग से दौड़ रहा है
मेरे अन्दर सूली बनी हुई है। मकान भरतपुर बेचना
चाहते हैं। इत्यादि। शेष कुशल है।"

यहां काट कर खोलिये To open cut h

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



श्री। -चौबुर्जा- भरतपुर
१८-१२-६२

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पूज्यपाद श्री बाबा-
महाराज के चरण सरोरुहों में कोटिशः प्रणाम
स्वीकृत हों। सर्वतः कुशलमस्तु / पहले जैपुर
से विस्तृत पत्र लिखा है मिला होगा, मैंने
श्री पं० रामचन्द्र जी शास्त्री वरकले को यहां आकर
गतकल २००/ रु. का मनी आर्डर करा दिया है
यह इसी विचार से लिख रहा हूं कि आप
और न भेज दें, यदि आप और आचोन्के
भेजना उचित समझें तो जैसी इच्छा हो।

श्री मनोहर लाल जी का इलाज जैपुर
हो रहा सौ. लाली वहां ही है।

आज श्री नदी प्रसाद जी से आपके आने के
समाचार मिले हैं सम्भवतः आप देहली

श्री जैन साहब ने प्रणाम लिखने को कहा है मैं और वे गत कल वृन्दावन श्री ब्रह्मचारी जी के समीप गये थे उन्होंने पुरुषोत्तम मास में भरतपुर आने को कहा है मैं ने उनसे यह भी कहा था कि वृन्दावन में किसी अन्य स्थान पर निवासादि की समुचित व्यवस्था की जाय तो उन्होंने यही कहा कि अक्षय तृतीया के दर्शन को ७-८ मी तक हमारे परिचित कोई सज्जन हैं वे चले जायेंगे उसके बाद ही, एक, दो बार उन्हो ने यही कहा कि मैं पुरुषोत्तम मास में ही कहीं बाहर ~~[illegible]~~ आ आ सकूंगा।

श्रीराजकुमारी जी प्रणाम दें।

श्री गिरिराज शरण जी सम्भवतः मुम्बई गये हैं उनका पत्र मुझे यहां आकर मिला है श्री रमानन्द जी का कोई पत्र आपके समीप आया या नहीं मेरे पास तो कोई पत्र नहीं आया है।

श्री सम्पूर्णदत्त जी का पत्र आया है उन्होंने अभी तक सप्तपदी की व्याख्या पूर्ण नहीं लिखी।

अभी H.H. के विवाह के बारे में पूर्ण रूपेण निश्चित नहीं हुआ है, सुना है "सर्वारम्भाः तन्दुल प्रस्थमूलाः" के अनुसार अभी निश्चय नहीं हो। वे देहली गये हैं।

शेष कुशल है कुशल पत्र अवश्य भेजते रहें। आपका - गोविन्द।

सभी को जय [illegible] कहें।

श्री:। चौबुर्जी-भरतपुर
१४-४-६१

अनन्त श्री विभूषित सर्वतन्त्र स्वतन्त्र
करुणा वरुणालय "श्री" पादपद्मोंमें
कोटिश: साष्टाङ्ग प्रणाम स्वीकृत हों।
सर्वत: कुशलं सत्यं शिवं सुन्दरमेवच।
गत कल श्री लक्खो जी के पधारने
पर स्वास्थ्य सुधरने के समाचार
सुनकर प्रसन्नता हुई, यह जानकर
और भी प्रसन्नता हुई कि प्रसन्न
मूर्ति श्री जय जय रामजी श्रीचरणोंके
समीप आगये हैं। उन्हें भी सादर सप्रेम
जयश्रीकृष्ण कहें।

वै. कृ. १० सोमवार से ही श्री पं० रामचन्द्र
जी परेल द्वारा मृत्युंजय जपारंभ करादियाहै।
श्री बाबूलालजी ने प्रणाम कहे हैं उन्हें
अब ज्वर तो नहीं है खांसी है।

Bhagwan Das
~~DALIP CHAND GUPTA~~,
Tilak Ram Ram Bux
Cotton Factory,

Lehra Gaga (PEPSU)

Dated 6.th; May..1953

श्री मान पूज्य पात्र गुरूजी महाराज

आप का पत्र तीन मई का लिखा हुआ आज अभी मिला। जिस के लिए धन्यवाद करता हूँ। इतफाक से आज भी ~~का~~ बाबू भागीरथ लाल और श्री पंडित चानन राम जी यहाँ पर नहीं है। परन्तु आशा है कि वह दोनो ही श्याम तक जरूर लौट आयेंगे

आप का पहला पत्र भी हर दम मेरे साथ रहता है। मैने अपनी जेब में रखा हुआ है। और जब वस्त्र ~~ब~~ बदलता हूँ तो उसे जेब में से निकाल कर दूसरी जेब में डाल लेता हूँ। इस पत्र को पहले पत्र के साथ अब शामिल कर लिया है। उमीद है यह पत्र मुझे दिल को धीरज रखने में मदद देगे। यदि आप उत्तर ~~का~~ केश चले जायें या किसी और स्थान पे तो कृपा कर के अपना अडरैस जरूर दें। मैं यदि पंडित चानन राम रजामंद हुए तो आप के दर्शन करने कि अभिलाषा रखता हूँ। अभी ... आशा है तीन

महीने और पडेगो। गर्मी निकल जाने के बाद यदि मै न किसी मजबूरी से अब दर्शन न कर सका आशा रखता हू कि आप हरिद्वार से लौटते हुए लैहरागागा मे अवश्य दर्शन देंगे।

कोई सेवा हो लिखें।

दास भगवानदास

॥ भरतपुर ॥ ॥ श्रीरामजी ॥ ॥ कोठी गुरु नगर भाग ॥

॥ सेवामें ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ता: २८/६/४६ ॥

पूं० १०८ श्रीमान् नाना महाराज के ।

चरण कमलों में / नेहरू सरनाम कुमार की बहोत २ डन्डोत मालूम हों / आगें आपकी क्रिपा से सब कुशल पूर्वक हैं / और आशा हैं / की आप भी कुशल से होंगें / दोनों कुंवर साहब और भैया साब की सेवामें बहोत २ डन्डोत अर्ज करते हैं / आगे पत्र में निवेदन हैं / कि नाना महाराज आपके कहने से मैंने आनन्द चली गई थी और आप भी बहोत मन मिले थे हुआ की पूं० १०८ श्रीमान रामजी साहब ने शराब भी खून पीना शुरू करदिया था और सिमचर्सो में रोभी गार जाये थे पवऊंर गोविन्द जी ने तो मना भी बहोत किया था मगर रामजी साहब ने एक भी नहीं मानी जब रामजी साहब ने मानी नहीं तो पवऊंर गोविन्द जी ने कोठी का आना छोड़ दिया था अब अचानक मैं ये हुआ की श्री रामजी साहब दो धोती और दो कमीज और एक कमर और एक तोलिया और २००) रुप्या लेकर कहीं चले गये हैं / और कीसी से कुच्छ नहीं कह गये हैं / और १८-६-४६- की रात को गाड़ी से गये हैं / आज रामजी साहब को गये १० दिन होगये हैं / मगर अभी तक कोई पता नहीं है / अच्छा फेर रामजी साहब ने पहली गाड़ी में से एक चिट्ठी पः गोविन्द जी को भेजी थी / उसमें लिखा था की रितमल अकेला दुनिया में आता है / और अकेला मरता है / और मैं बहोत अच्छी तरह से रहुगा आप मेरा कुच्छ फीकर नहीं करें / नस से बात लिखी थी / इस खत को पढते ही

नाना महाराज आप आपके रामजी साहब को कहीं से भरतपुर लादें ।

आपकी आज्ञाकारी सरनाम कुमारी

प० गोविन्द जी और सुखराम मुझे आगरा से लिवा लाये और मैं ता: २४ को

भरतपुर आ गई हूँ। अब नवासों नाना महाराज मेरे लिये किया हुकम है। मैं

अब कौन तरह से इन नवासों को पालूँ अब इस महीने से खान पान भी

बन्द हो जायगा और रानजी साहब जो [illegible] लेकर गये हैं। [illegible]

[illegible] भी उन्होंने पियारस से लिया कुछ गये हैं। नाना महाराज मैं तो

अब पे समझ रही थी की रानजी साहब अब आपने अंगरेजी पढ़ रहे

चुके हैं। और अबी भी यहाँ आये हैं। और नाना महाराज [illegible] रहने से

मन खराब आदत छूट जायगी इसी वजह से मैंने आपसे कुछ बताया

[illegible] नाना महाराज अब आप [illegible] रानजी साहब को

[illegible]

ठीक ढंग पे आ जायगें प० गोविन्द जी ने और इस्त्री की लिखी पढ़ी थी

और सराय पिहे भी [illegible] इसी उनके मारे ने चले गये हैं।

अब आप नाना महाराज मेरे लिये कोई उपाय नवासों की अब मैं लिखी

कर अब मेरा तो कोई कसूर है नहीं है। मैं [illegible] रहूँ और किया

करूँ मेरे लिये लिखा हुकम है। और नाना महाराज मैं तो आप केई ऊपर

हूँ अब भी रानजी साहब की आदतों को आप ही सुधार सकते हैं।

और आपई आदत ठीक करो जो और आपई रानजी साहब को भरतपुर

लाओगे और जाद मैं आपको लिखा कह सकती हूँ। और नाना महाराज

अबके आप मेरे कहने से एक दफे भरतपुर और हो जाओ फेर

कभी आना था नहीं मगर अबके मेरी दिल इतना [illegible] इतनकर

आप भरतपुर [illegible] पाओ और मैं [illegible] जरूर है

आवें जो। और जादा लिखा है इन थोड़े को जादा समझना जानिये को आप

. मत का जवाब नहीं देना जी। मेरे सर पे ख्याल इतना जी नाना महाराज

मे दो काम ही आपको जरूर करने हैं। एक तो रानजी साहब को सुधार

[illegible] जिस तरीके से इच्छा मे हो आदत उनकी आप ही

छुड़ा सकते हैं।

टोंक
ता. ८-१०-४९

आदरणीय श्रीमान मिश्र जी

सादर प्रणाम। अत्र कुशलं तत्रास्तु: अपरंच आपका दिनांक
२९/९/४९ का पत्र आज प्राप्त हुआ मैं कल ता. ६ १०/४९ को शाम को जयपुर से ही आया हूँ
[illegible] भी तक हुक्म नहीं हुआ है श्री गिरिजाप्रसाद जी से भी मिला की आज्ञा है ता. १६ १०/४९ तक
[illegible] हो जावे इसी वास्ते मैं भरतपुर भी न [illegible] गया हूँ और अब जाने का विचार भी तब ही
- श्री गिरिजाप्रसाद जी को पुन: श्री [illegible] स्वरूप जी द्वारा याद दिलाने के लिये कह
[illegible] हूँ वैसे उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं [illegible] फिर भी उन्होंने वायदा किया है कि
अवश्य याद दिला दूंगा - हो सके तो [illegible] विरजी राम जो पुलिस में [illegible]
[illegible] डाल की पं. तोताराम जी को पुन: [illegible] डलवादें तो शायद जल्दी [illegible]
[illegible] मैं स्वयं पं. तोताराम जी से काफी कह सुन आया हूँ और गिरिजाप्रसाद जी से
[illegible] के लिये कह आया हूँ श्री गिरिजा [illegible] जी से भी मिला था।

[illegible] स्वास्थ्य ठीक नहीं [illegible] रहते हैं चिन्ता की [illegible]
[illegible] मुंह से खून आने वाली शिकायत [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] गी। खांसी की शिकायत [illegible]
[illegible] को यहां स्पष्ट उत्तर [illegible]
[illegible] रोशन औषधी होती [illegible]
--- तो कहां २-३ दिन [illegible]
---- का नहीं हुआ [illegible]
[illegible] नहीं है?

[illegible] नहीं आया है वैसे [illegible] मुझे [illegible] समाचार
हुये कौशिक सब सकुशल। [illegible] समाचार भी भिजवा दिये हैं में इरादा
भरतपुर केवल [illegible] होने के कारण नहीं जा रहा हूँ इससे
यहां कार्य भी काफी है [illegible]
जाना ठीक किया [illegible] ता. १३ १०/४९ में जयपुर की काफी कार्य है
होती है [illegible] जाने गांव में कहीं [illegible]
नौकरी का मामला [illegible] नहीं हो पाता [illegible]
और [illegible] का काम करना की चिन्ता

भेजने वाले का नाम और पता :-

INSPECTOR (E)

Cooperative Societies,

Tonk

पहला मोड़

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये

1-K/20

FARIDABAD (NIT)

INDIA

CLOCK TOWER

9 OCT 59

माई सूरत आकर मिला था उससे सब कह
दिया था अब उनका भी उत्तर प्रत्यक्ष में ही
मिलकर ले आवेंगे अथवा मुझे भेजेंगे
मैं और श्री लक्खो जी कल रात की ट्रेन
से अथवा परसों जनता से देहली श्री
राजकुमार जी के विवाह में सम्मिलित
होने जा रहे हैं संभवतः गृहिणी भी जाय
मत: मार्गशिर शुक्ला १० रविवार ता. १ 12/56
को गायत्री की पुत्री शीला का विवाह है
उसके लिये हमें बरेली जाना होगा अत:
इन्हें देहली मोहिनी जी के छोड़ कर बरात
वापिस आकर बरेली चला जाऊंगा।
वहां से ४-५ ता. तक आना होगा।
श्री कस्तूरी लाल जी को ता. २-११ का
लिखा पत्र कल कला से आया था उन्हें
भी आपके पत्र के साथ ही उत्तर लिख
चुका हूं यह समाचार करनाल वाले पत्र
में लिख चुका हूं। आज श्री रघुनाथचन्द्र

श्री बाबू हरिरामजी को भाइ: सपरिवार सादर सस्नेह जय शंकर

जी शास्त्री का पत्र आया है, उन्होंने कि
कारणों के कारण श्री श्री विंशति का स
विशुद्ध प्रति न भेजने की असमर्थता प्रक
अपने को लज्जित होकर क्षमा प्रार्थना की है
और स्वयं लिखकर भेजने को लिखा है

श्री पं. उमाशंकर जी का भी पत्र आ
उनकी सौ. को कुमारी का सम्बन्ध भी आ
नुसार कालका भाद्र. ४) ६ को निश्चि
दिया था १०१) नकद ॥ ५१ सेर मोदक
फलादि सब ठीक कर दिया है।

श्री गिरिराज शरण जी का ता. २-११
बड़ा लम्बा चौड़ा विस्तृत पत्र आया है
उत्तर अभी नहीं दिया है व्यावहारिक
बातों में पत्र में सार यह है कि D. F. O
उनके विरुद्ध जाने का २ तारीख मारा है
शेष सब कुशल है आप कुछ चिन्ता न करें
यों तो सब विश्व की चिन्ता आपको ही है
आपके जाने के पीछे इन दिनों यहां कुछ जल
इतना दूषित रहा कि सभी घर वालों को ज्वर
खांस रहा है मैं भी अभी स्वस्थ नहीं / शेष
गोवि



श्री:। भरत पुरत: २० ११/५७
रात्रौ ७ बजे

अनन्त श्री विभूषित आचार्य चरण
की पुनीत सेवा में दासानुदास गोविन्द के
कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वत: कुश-
लमस्तु। आज अभी पत्र मिला पहले पत्र का
उत्तर ता० ९-११-५७ को करनाल भेज चुका हूं
यत: आपने लिखा था कि "सम्भवत: कल
करनाल जाना होगा" इस विचार से
वहां ही लिखा अस्तु श्री जैन साहब पुन:
सूरत गये हैं पहली यात्रा में उन्हें वह
व्यक्ति मिल गया था जिससे उन्हें व्या-
पार में रुपया लगवाता है उसने पूछा-
था कि क्या स्कीम है रुपया किस कार्य
किस तरह लगाना है इत्यादि / भू निधि
के बारे में वह व्यक्ति तो उन्हें नहीं मिला
जिससे रुपया लेना है उसका छोटा
क्रे० पृ० प०

श्री । भरतपुर ता. २६-६-४७

अनन्त श्री पूज्य पाद स्वा. महाराज के पुनीत पाद पद्मो में चरणों में चर गोविन्द के अनेकशः प्रणाम स्वीकृत हो।
सर्वतः कुशलं मस्तु। आज ५-६ दिन की आपके पत्र की प्रतीक्षा के अनन्तर पत्र लिख रहा हूं आपने अपने पहुंचने का पत्र क्यों नहीं लिखा क्या कारण है कृपया कुशल पत्र देने का कष्ट अवश्य करें।
यहां की स्थिति प्रतिदिन भयानक होती चली आरही है मेवात के उपद्रव बढ़ते ही जा रहे हैं अनुमानतः ६० गांव भस्मीभूत हो चुके हैं सीकरी में कत्ले आम हुआ है जिसमें सब हिन्दू ही हिन्दू काम आये हैं, अलवर राज्य में नौगांव नामक मेवों का ग्राम [illegible] में भी कत्ले आम हुआ है यहां पर सिवाय ८ स्त्रियों के और कोई भी बाकी नहीं बचा खेरली के समीपवर्ती अरवे गढ़ ग्राम जला दिया नदबई और ब्याना खाली हो चुके है नगर भी जन रहित हो गया है भगवान की इच्छा है। आपके बारे में भी H.H. ने मालवीय से कहा था कि कोई परदेशी संन्यासी आया हुआ P.T.O